नवसर्जन संस्कृति

RNI No.: UPHIN/25/A1698
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 02
अंक : 005
दि. 05.05.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

आज बंगाल की जीत के साथ गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक कमल ही कमल खिला हुआ है : पीएम मोदी

(जीएनएस)।

नई दिल्ली, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछले साल 14 नवंबर को जब बिहार चुनाव के नतीजे आए थे, तब मैंने यहीं इसी जगह से आप सबको कहा था गंगा जी बिहार से आगे बहते हुए गंगासागर तक जाती हैं। आज बंगाल की जीत के साथ गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक कमल ही कमल खिला हुआ है। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और अब पश्चिम बंगाल। आज मां गंगा के ईर्द-गिर्द बसे इन राज्यों में भाजपा, ठऊअ सरकार है।'

पीएम मोदी ने सभी पांच राज्यों के मतदाताओं को धन्यवाद दिया

प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को सभी पांच राज्यों के मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि भाजपा कार्यकताओं के बीच जीत का जो उल्लास दिखाई दे रहा था वह यादगार था और उन्होंने इसे एक ऐतिहासिक दिन बताया क्योंकि पार्टी ने तीन विधानसभाओं में शीर्ष स्थान हासिल किया। उन्होंने कहा, 'आज का दिन प्रदर्शन, स्थिरता और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की राजनीति में विश्वास जताने का दिन है, और देश के उज्ज्वल भविष्य की घोषणा का दिन है'

मैंने कहा था कि न मैं आया हूं, न मुझे किसी ने भेजा है, मां गंगा ने मुझे बुलाया है

उन्होंने कहा, '2013 में जब भाजपा ने मुझे प्रधानमंत्री के उम्मीदवार के रूप में भी काम दिया और जब मैं काशी में अपना नामांकन भरने गया था और पत्रकारों ने मुझे घेर लिया तो स्वाभाविक रूप से मेरे हृदय से एक ध्वनि निकली और मैंने कहा था कि न मैं आया हूं, न मुझे किसी ने भेजा है, मां गंगा ने मुझे बुलाया है और आज मैं हर पल अनुभव कर रहा हूं, मां गंगा का आशीर्वाद निरंतर हम सब पर अपनी कृपा बरसा रहा है।'

भाजपा कार्यकताओं की कड़ी मेहनत और समर्पण के कारण ही कमल खिला

पीएम मोदी ने कहा, 'भाजपा कार्यकताओं की कड़ी मेहनत और समर्पण के कारण ही कमल खिला है,' और मतदाताओं ने दुनिया को दिखा दिया है कि देश को लोकतंत्र की जननी क्यों कहा जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि जय पराजय लोकतंत्र और चुनावी राजनीति का एक स्वाभाविक हिस्सा होता है। लेकिन पांच प्रदेशों की जनता ने पूरे विश्व के दिखाया है ये हमारा भारत, मदर ऑफ डेमोक्रेसी क्यों हैङ्क लोकतंत्र, डेमोक्रेसी, हमारे लिए सिर्फ एक तंत्र नहीं है। ये हमारी रगो में दौड़ता हुआ संस्कार है। ये हमारी रगो की संस्कार सरिता है और आज सिर्फ भारत का लोकतंत्र ही नहीं जीता है। आज भारत का संविधान भी जीता है। हमारी संवैधानिक संस्थाएं जीती हैं। हमारी लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं जीती हैं।

पश्चिम बंगाल में करीब 93 प्रतिशत मतदान अपने आप में ऐतिहासिक

उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में करीब 93% मतदान होना, अपने आप में ऐतिहासिक रहा है। असम, तमिलनाडु, पुडुचेरी और केरलम में भी मतदान के नए रिकॉर्ड बने हैं। इसमें भी महिलाओं की भागीदारी बहुत अधिक रही है। ये भारतीय लोकतंत्र की सबसे उजली तस्वीर बन रही है।'

पीएम मोदी ने कहा कि अभी 4 मई की यह शाम भले ही ढल रही हो लेकिन बंगाल की पावन धरा पर आज एक नया सूर्योदय हुआ है। एक ऐसा सवेरा जिसका इंतजार पीढ़ियों ने किया है। भाजपा ने जितनी सीटें जीतीं, वो महज एक चुनावी आंकड़ा नहीं है। ये उस अडिग विश्वास की हुंकार है जिसने डर, तुष्टीकरण और हिंसा की राजनीति को जड़ से उखाड़ फेंका है।

भाजपा के हर छोटे-बड़े कार्यकर्ता ने एक बार फिर से कमाल कर दिया है, कमल खिला दिया है: पीएम मोदी

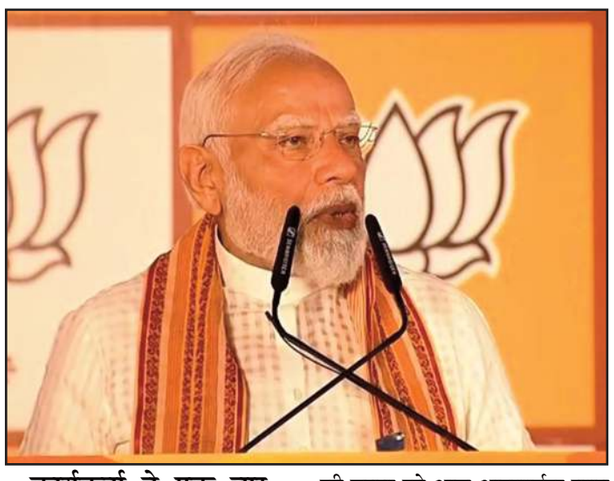

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मैं भाजपा के कोटि-कोटि कार्यकताओं का हृदय से अभिनंदन करता हूं। भाजपा के हर छोटे-बड़े कार्यकर्ता ने एक बार फिर से कमाल कर दिया है, कमल खिला दिया है। आपने नया इतिहास रच दिया है। उन्होंने कहा कि मैं बंगाल की जनता को, असम की जनता को, पुडुचेरी की जनता को, तमिलनाडु और केरलम की जनता को आज आदरपूर्वक नमन करता हूं।

पीएम मोदी सोमवार शाम को असम और पश्चिम बंगाल चुनावों में पार्टी के प्रदर्शन का जश्न मनाने के लिए पार्टी मुख्यालय पहुंचे। उन्होंने असम और पश्चिम बंगाल चुनावों में पार्टी के प्रदर्शन का जश्न मनाने के लिए पार्टी मुख्यालय में मौजूद पार्टी कार्यकताओं और नेताओं को बधाई दी। जब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन पीएम मोदी को माला पहनाने के लिए आगे बढ़े, तो उन्होंने माला ली और नितिन नवीन को पहनाई। वहीं मोदी-मोदी के नारों से भाजपा मुख्यालय गूंज उठा।

इसके बाद, अपने संबोधन के दौरान, पीएम मोदी ने कहा कि आज का ये दिन ऐतिहासिक है, अभूतपूर्व है। जब वर्षों की साधना सिद्धी में बदलती है तो चेहरे पर जो खुशी होती है वो खुशी आज मैं देश भर के भाजपा के कार्यकताओं के चेहरे पर देख रहा हूं।' पीएम मोदी ने आगे कहा कि एक कार्यकर्ता होने के नाते मैं भाजपा के हर कार्यकर्ता की खुशी में शामिल हूं। आज का यह दिवस कई मायनों में खास है, विशेष है, यह देश के उज्ज्वल भविष्य की उद्घोषणा का दिन है। यह भरोसे का दिन है। भरोसा भारत के महान लोकतंत्र पर, भरोसा परफॉर्मेंस की राजनीति पर, भरोसा स्थिरता के संकल्प पर, भरोसा एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना पर।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'आज विभिन्न उपचुनावों के परिणाम भी अत्यंत उत्साहजनक रहे हैं। महाराष्ट्र, गुजरात, नागालैंड और त्रिपुरा में जो उपचुनाव हुए हैं, उसमें हमारे उम्मीदवारों को जनता-जनार्धन ने आशीर्वाद दिया और इन राज्यों में भी जीत गए हैं। ठऊअ की नेता, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री, सुनेत्रा पवार जी ने भी बड़ी जीत दर्ज की है। मैं इन सभी राज्यों की जनता का उनके समर्थन के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।'

अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा, 'भाजपा के अध्यक्ष नितिन नवीन द्वारा अध्यक्ष पद संभालने के बाद यह पहले विधानसभा चुनाव थे। इन चुनाव में पार्टी के हर कार्यकर्ता को उनका जो मार्गदर्शन मिला, वह मार्गदर्शन इस जीत में बहुमूल्य रहा है।'

वहीं, इससे पहले पार्टी अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा कि आज 4 मई का दिन है और नतीजे आए हैं लेकिन मैं 4 जून 2024 को भी आपको याद करवाना चाहता हूं। जनता ने हमारे नेतृत्वकर्ता को जो समर्थन दिया था, जो विश्वास जताया था, उसमें कहीं न कहीं एक कसक रह गई थी और आज जब 4 मई को जनता ने हमें प्रचंड जीत दिलाई है तो 2024 की उस कसक को पूरा किया है और उसके बाद जब-जब चुनाव हुए हर राज्य में भाजपा को प्रचंड जीत देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में दक्षिण भारत में भी भाजपा का कमल खिलेगा।

पश्चिम बंगाल और असम में भाजपा की जीत के बाद लखनऊ और पास के जिलों में उत्सव जैसा माहौल, जमकर आतिशबाजी

भाजपा के प्रदेश मुख्यालय में एकत्र नेताओं ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक राजधानी में भगवा लहरा गया है।

...और पढ़ें

(जीएनएस)।

लखनऊ। पश्चिम बंगाल के साथ ही असम के विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के शानदार प्रदर्शन का जश्न उत्तर प्रदेश में जमकर मनाया जा रहा है। पश्चिम बंगाल में भाजपा ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है, जबकि असम और पुडुचेरी में भी पार्टी सरकार बना रही है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ ही उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक ने पश्चिम बंगाल में भाजपा की जीत को जनता में प्रधानमंत्री मोदी में विश्वास की जीत बताया और कहा कि पश्चिम बंगाल में ममता का कुशासन हार गया।

लखनऊ में भाजपा के प्रदेश मुख्यालय के साथ ही पास के जिलों सीतापुर, बाराबंकी, रायबरेली, अयोध्या और अमेठी-सुलतानपुर में भी भाजपा के नेता और कार्यकर्ता जमकर आतिशबाजी करने के साथ मिठाई बांट रहे हैं।

लखनऊ में भाजपा के प्रदेश मुख्यायल में एकत्र भाजपा के नेताओं ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक राजधानी में भगवा लहरा गया है। विपक्ष जब हारता है तो अनर्गल आरोप लगाता है। भाजपा की इस जीत का बड़ा संदेश जा रहा है। पश्चिम बंगाल के साथ असम में भी फिर से भाजपा के सुशासन को जनता ने सराहा है। इसके साथ ही पुदुचेरी में भी भाजपा का परचम लहराया है।

टीवीके ने पेराम्बूर-त्रिरुचि में डीएमके को किया धुआं-धुआं, विजय की प्रचंड जीत!

(जीएनएस)।

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव 2026 की मतगणना सुबह 8 बजे से शुरू हुई, शाम 5 बजे तक पूरे राज्य में सियासी भूचाल ला दिया है। अभिनेता से नेता बने थलापति विजय की नई पार्टी तमिलगा वेट्री कजगम (TVK) ने डीएमके के पारंपरिक गढ़ों में जबरदस्त बढ़त बनाई है। विजय खुद पेरम्बूर और त्रिची पूर्व (तिरुचिरापल्ली पूर्व) सीटों से चुनाव लड़ रहे हैं और दोनों जगह भारी अंतर से आगे चल रहे हैं।

या यूं कहें कि लगभग हरा ही दिया है। ळश्ड पूरे राज्य में 100 से ज्यादा सीटों पर बढ़त बनाए हुए है, जो तमिलनाडु की राजनीति में एक ऐतिहासिक बदलाव का संकेत दे रहा है। पेरम्बूर सीट पर 16 राउंड की काउंटिंग में विजय 36,591 के अंतर से लीड कर रहे हैं, जबकि त्रिची पूर्व सीट पर 15 राउंड की काउंटिंग में 19,153 लीड कर रहे हैं।

सी. जोसेफ विजय, जिन्हें पूरे दक्षिण भारत में थलापति विजय के नाम से जाना जाता है, पहली बार चुनावी मैदान में उतरे हैं। उन्होंने अपनी पार्टी ळश्ड को पूरे 234 सीटों पर उम्मीदवार उतारे और युवाओं, शहरी मतदाताओं तथा बदलाव की तलाश में लगे लोगों को खास तौर पर साधा। विजय ने अभियान के दौरान भ्रष्टाचार, युवा बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर फोकस किया।

5:30 बजे तक के ट्रेंड्स (ECI डेटा के अनुसार):

पेरम्बूर सीट: सी. जोसेफ विजय (TVK) - 83,042 वोट (+36,591 लीड), आर.डी. शेखर (डीएमके) - 46,451, एम. थिलागाबामा (पीएमके) - 6,417 त्रिची पूर्व सीट: सी. जोसेफ विजय (TVK) - 58,322 (+19,153 लीड), एस. इनिगो इरुदयाराज (डीएमके) - 39,169, जी. राजशेखरन (एआईएडीएमके) - 13,586

ये आंकड़े विजय की स्टार पावर और TVK की संगठनात्मक ताकत को दिखाते हैं। पेरम्बूर जैसे डीएमके के मजबूत गढ़ में 36,000+ वोटों की लीड किसी बड़े उलटफेर का संकेत है।

TVK की राज्यव्यापी ताकत

दोपहर तक TVK 109 सीटों पर आगे। सत्तारूढ़ डीएमके 59 सीटों पर और विपक्षी एआईएडीएमके 45 पर बढ़त बनाए हुए हैं। सरकार बनाने के लिए 118 सीटें जरूरी हैं और TVK इस आंकड़े के बेहद करीब नजर आ रही है।

दीदी की करारी हार पर अखिलेश के पुराने ट्वीट ने मचाया बवाल, सोशल मीडिया पर हुए ट्रोल

(जीएनएस)।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों ने सबको चौंका दिया है। पिछले 15 वर्षों से सत्ता पर काबिज ममता बनर्जी का अभेद्य किला आखिरकार ढह गया है। 'भगवा लहर' ने बंगाल में ऐसी दस्तक दी कि तृणमूल कांग्रेस (ळटउ) के कई दिग्गज मंत्री अपनी सीटें नहीं बचा पाए।

जहां भाजपा 200 से अधिक सीटें जीतकर ऐतिहासिक बहुमत की ओर बढ़ रही है, वहीं ममता बनर्जी की पार्टी महज 80 सीटों पर सिमटती नजर आ रही है। इस करारी हार के बाद अब सोशल मीडिया पर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव को भी घेरा जा रहा है, जिन्होंने चुनाव से ठीक पहले दीदी की जीत को लेकर बड़े-बड़े दावे किए थे।

अखिलेश का ट्वीट: 'एक अकेली लड़ जाएगी' हुआ फेल

चुनाव परिणाम आने से ठीक दो

दिन पहले अखिलेश यादव ने ममता बनर्जी के समर्थन में एक ग्राफिक शेयर किया था। उन्होंने लिखा था, 'एक अकेली लड़ जाएगी, जीतेगी और बढ़ जाएगी।' अखिलेश का मानना था कि 19 राज्यों की सत्ता और केंद्र सरकार के खिलाफ ममता बनर्जी अकेले मोर्चा संभाल रही हैं और जनता उनके साथ है। हालांकि, चुनावी नतीजों ने इस भरोसे को पूरी तरह तोड़ दिया। जनता ने अखिलेश के अनुमानों के उलट भाजपा के पक्ष में प्रचंड मतदान किया।

पर्यवेक्षकों की तैनाती पर उठाए थे तीखे सवाल

मतगणना से पहले पश्चिम बंगाल में अतिरिक्त पर्यवेक्षकों और पुलिस बलों की तैनाती पर अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग और भाजपा सरकार को आड़े हाथों लिया था। उन्होंने ट्वीट कर कहा था कि अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती का मतलब है कि भाजपा हार रही है और उसे चुनाव आयोग पर भी भरोसा नहीं है। अखिलेश ने यहां तक दावा कर दिया था कि टीएमसी 234 सीटें जीतकर वापसी कर रही है।

राष्ट्रपति मुर्मु और प्रधानमंत्री मोदी ने उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन को जन्मदिन की बधाई दी

राष्ट्रपति मुर्मु ने 'एक्स' पर अपने संदेश में उपराष्ट्रपति के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और राष्ट्र सेवा में निरंतर ऊर्जा की कामना की। वहीं, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संदेश में कहा कि उपराष्ट्रपति देश को 'विकसित भारत' बनाने के सामूहिक संकल्प को सशक्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि संसद की कार्यवाही को अधिक प्रभावी और उत्पादक बनाने के उनके प्रयास लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दशार्ते हैं।

प्रधानमंत्री ने उपराष्ट्रपति के सर्वांगीण विकास के प्रति समर्पण और गरीबों व वंचितों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को प्रेरणादायक बताया। उन्होंने कहा कि उनका सार्वजनिक जीवन समर्पण, अनुशासन और स्पष्ट उद्देश्य से प्रेरित रहा है।

केरल में बुझा वामपंथ का आखिरी दीया, पहली बार कम्युनिस्टों के पास एक भी राज्य नहीं

भारत की राजनीति में आज एक युग का अंत हो गया है। केरल विधानसभा चुनाव 2026 के नतीजों ने साफ कर दिया है कि देश से वामपंथ (Left) का आखिरी किला भी ढह चुका है। आजादी के बाद यह पहली बार है जब भारत के किसी भी राज्य में कम्युनिस्टों की सरकार नहीं होगी।

यूडीएफ (UDF) की भारी जीत ने वामपंथ को केरल की सत्ता से बाहर कर दिया है। अब उनके पास न कोई राज्य बचा है और न ही संसद में खास ताकत। यह हार केवल एक चुनाव की हार नहीं, बल्कि वामपंथ के अस्तित्व पर सबसे बड़ा संकट है।

एनडीए का प्रदर्शन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में जनता के बढ़ते विश्वास को दशार्ता है: आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री

युवा मतदाता विकास, विश्वसनीयता और जनता के साथ मजबूत जुड़ाव को महत्व देते हैं- आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री

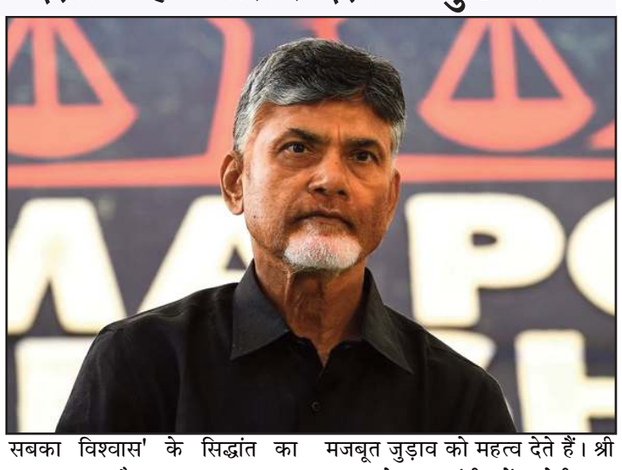

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि चुनाव रुझानों में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) का प्रदर्शन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जनता के बढ़ते विश्वास को दशार्ता है। श्री नायडू ने कहा कि ये रुझान एनडीए के विकास पर केंद्रित दृष्टिकोण और विकसित भारत के उसके विजन का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि गठबंधन जनता की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है और 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के सिद्धांत का पालन करता है।

उन्होंने कहा कि रुझान यह भी दशार्ते हैं कि युवा मतदाता विकास, विश्वसनीयता और जनता के साथ मजबूत जुड़ाव को महत्व देते हैं। श्री नायडू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के साथ-साथ एनडीए के नेताओं, पार्टी

'मोदी जी की आंखों में कभी नमी नहीं आने देंगे...' बंगाल में भाजपा की जीत पर कपिल मिश्रा का बड़ा बयान

मंत्री कपिल मिश्रा ने पश्चिम बंगाल में बीजेपी की बढ़त पर पीएम मोदी की भावुक अपील का जिक्र करते हुए कहा कि देश की जनता ने संकल्प लिया है, हर संघर्ष में उनके साथ खड़ी रहेगी.

(जीएनएस)।

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में बीजेपी की बढ़त को लेकर सियासत तेज हो गई है. शुरूआती रुझानों में भारतीय जनता पार्टी मजबूत स्थिति में दिख रही है, जबकि तृणमूल कांग्रेस 100 सीटों के भीतर सिमटती नजर आ रही है. इस बीच दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री कपिल मिश्रा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते हुए बड़ा बयान दिया है.

कपिल मिश्रा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'लोकसभा के नतीजे जिस दिन आए, उस दिन देश ने प्रधानमंत्री की

आंखों में हल्की सी नमी देखी थी. उस पल, शायद पूरे देश का दिल एक साथ धड़क उठा था और उसी पल, हर मतदाता ने मन ही मन एक संकल्प लिया. अब इन आंखों में कभी नमी नहीं आने देंगे. अब हर संघर्ष में उनके साथ खड़े रहेंगे.'

उन्होंने आगे कहा, 'तभी तो उसके बाद हरियाणा की धरती हो, महाराष्ट्र की आवाज हो, दिल्ली की धड़कन हो, बिहार का विश्वास हो, या अब बंगाल में बनता इतिहास हर जगह जनता ने अपने वोट से एक ही बात कही है, 'मोदी जी, आप बढ़ते रहिए, देश आपके साथ हैं.'

बंगाल में बनता दिख रहा नया राजनीतिक समीकरण

बंगाल में इस बार के चुनाव नतीजे कई मायनों में अहम माने जा रहे हैं. लंबे समय से सत्ता में रही टीएमसी को कड़ी टक्कर मिल रही है, जबकि बीजेपी तेजी से अपनी पकड़ मजबूत करती दिख रही है. राजनीतिक जानकारों का मानना है कि अगर यही रुझान नतीजों में बदलते हैं, तो राज्य की राजनीति में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है.

पश्चिम बंगाल में खिला कमल तो क्यों रोने लगे केंद्रीय मंत्री कैलाश विजयवर्गीय? बयां किया दर्द

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जीत की ओर अग्रसर है। फाइनल चुनाव परिणाम की चुनाव आयोग ने अभी अधिकारिक घोषणा नहीं की है लेकिन रुझानों से साफ है कि भारतीय जनता पार्टी बहुमत

से सरकार बना रही है, जिसने ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से बेदखल किया। वहीं बंगाल चुनाव के नतीजों में भाजपा की की जीत ने भाजपा के दिग्गज नेता कैलाश विजयवर्गीय को भावुक कर दिया। मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री की आंखों से आंसू छलक पड़े।

पूर्व सांसद रीता बहुगुणा जोशी के पति का निधन, लखनऊ एसजीपीजीआई में ली अंतिम सांस, प्रयागराज में होगा अंतिम संस्कार

पूर्व भाजपा सांसद रीता बहुगुणा जोशी के पति पीसी जोशी का लखनऊ के SGPGI में निधन हो गया। वे लंबे समय से अस्वस्थ थे। उनका अंतिम संस्कार प्रयागराज में किया जाएगा।

(जीएनएस)।

लखनऊः पूर्व भाजपा सांसद रीता बहुगुणा जोशी के पति पीसी जोशी का सोमवार सुबह निधन हो गया। उन्होंने लखनऊ स्थित SGPGI में सुबह करीब 7 बजे अंतिम सांस ली। रीता बहुगुणा जोशी ने अपने आधिकारिक अकाउंट के जरिए इस दुखद समाचार की जानकारी साझा की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई नेताओं ने शोक व्यक्त किया।

कुछ समय से चल रहे थे अस्वस्थ

परिजनों के मुताबिक, पीसी जोशी पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे और SGPGI में उनका इलाज चल रहा था। सोमवार सुबह अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी, जिसके बाद उनका निधन हो गया।

तकनीकी क्षेत्र में दिया महत्वपूर्ण योगदान

पीसी जोशी पेशे से मैकेनिकल इंजीनियर थे। उन्होंने तकनीकी और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 1976 में उनका विवाह रीता बहुगुणा जोशी से हुआ था। वे अपने सरल, मिलनसार और अनुशासित व्यक्तित्व के लिए जाने जाते थे।

प्रयागराज में होगा अंतिम संस्कार

परिवार के अनुसार, उनका पार्थिव शरीर सोमवार देर शाम प्रयागराज लाया जाएगा। मंगलवार को प्रयागराज में पूरे विधि-विधान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

सीएम योगी ने जताया शोक

वहीं, इस दुखद खबर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी शोक व्यक्त किया। उन्होंने पर लिखा कि पूर्व सांसद रीता बहुगुणा जोशी के पति का निधन अत्यंत दुखद है और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उन्होंने ईश्वर से शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति देने की कामना की।

लखनऊ में लैंड नहीं कर पाई उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक की फ्लाइट

(जीएनएस)।

लखनऊ। मौसम खराब होने के कारण सोमवार सुबह दिल्ली से लखनऊ आ रहे उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक का विमान आंधी में फंस गया। इसके बाद विमान को भोपाल डाइवर्ट किया गया।

लखनऊ में मौसम ठीक होने के बाद दोपहर 12:27 बजे विमान पहुंच सका। इसके अलावा दो अन्य विमान भी हवा में चक्कर काटते रहे। दिल्ली में खराब मौसम के कारण दृश्यता कम हो गई। इससे रविवार रात 11 से तड़के तीन बजे तक 15 विमानों को लखनऊ डाइवर्ट किया गया। यह विमान एक के बाद एक चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उतरे। मौसम ठीक होने के बाद विमान दिल्ली रवाना हो गए।

दोनों उप मुख्यमंत्री इंडिगो एयरलाइन के विमान 6ई-6476 से दिल्ली से सुबह 7:20 की जगह 8:02 बजे लखनऊ के लिए रवाना हुए। लखनऊ के करीब विमान पहुंचा तो तूफान में फंस गया। पायलट ने सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए एटीसी से संपर्क किया। विमान को भोपाल डाइवर्ट कर दिया गया। भोपाल से यह विमान दोपहर 12:27 बजे लखनऊ पहुंचा।

इसके अलावा हैदराबाद से लखनऊ आ रहा विमान 6ई-179 हवा में 30 मिनट तक और चंडीगढ़ से आ रहा विमान 6ई-146 करीब एक घंटा तक चक्कर लगाने के बाद लखनऊ उतर सका। इसी तरह दिल्ली में मौसम खराब होने के कारण वहां के लिए रात 2:22 बजे रवाना हुआ एक विमान बीच रास्ते से वापस लौट आया। काठमांडू से दिल्ली जा रहा विमान रात 11:35 बजे, औरंगाबाद-दिल्ली विमान रात एक बजे, मुंबई-दिल्ली विमान रात 12:55 बजे,कोयंबटूर- दिल्ली विमान रात एक बजे,गुवाहाटी- दिल्ली विमान रात सवा एक बजे लखनऊ में उतरा।

इसी तरह हैदराबाद- दिल्ली विमान रात 2:34 बजे,मस्कट- दिल्ली विमान रात 2:40 बजे,फुकेट- दिल्ली विमान रात 2:43 बजे, हैदराबाद-दिल्ली विमान रात 2:48 बजे आया। जयपुर से दिल्ली जा रहे चार विमान रात तीन बजे, 3:30 बजे , 3:37 बजे और 3:38 बजे लखनऊ एयरपोर्ट पर उतरे। बेंगलुरु- दिल्ली विमान रात 3:31 बजे लखनऊ आया। अचानक इतनी बड़े पैमाने पर विमानों के डाइवर्ट होने पर एटीसी सतर्क हो गया। एयरपोर्ट प्रशासन ने भी विमानों के लिए पार्किंग वे एरिया खाली कराया।

बंगाल में टीएमसी का 'भय' परास्त, प्रधानमंत्री मोदी का 'भरोसा' विजयी, 2027 चुनाव के जबरदस्त ऊर्जाः पंकज चौधरी

(जीएनएस)।

लखनऊ, चार मई (भाषा) भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष और केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने सोमवार को पश्चिम बंगाल समेत अन्य राज्यों के विधानसभा चुनावों में पार्टी की ऐतिहासिक जीत पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि बंगाल में टीएमसी (तृणमूल कांग्रेस) का 'भय' परास्त हुआ है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का 'भरोसा' विजयी हुआ है।

भाजपा प्रदेश मुख्यालय से जारी एक बयान में चौधरी ने यह दावा किया। बयान के अनुसार पश्चिम बंगाल, असम एवं पुडुचेरी के विधानसभा चुनावों में भाजपा को मिली ऐतिहासिक विजय पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

पंकज चौधरी ने कहा, "गंगोत्री से गंगासागर तक भाजपा को मां गंगा और जनता जनार्दन का आशीर्वाद मिल रहा है।"

चौधरी ने कहा, "बंगाल में टीएमसी का 'भय' परास्त हुआ है और प्रधानमंत्री मोदी जी का 'भरोसा' विजयी हुआ है।"

उन्होंने कहा कि असम में लगातार तीसरी जीत ने साबित कर दिया है कि जनता अब केवल 'कौशल प्रदर्शन' की राजनीति में रुचि ले रही है।

उन्होंने कहा कि पूर्वी भारत से उठी यह लहर उत्तर प्रदेश के 'मिशन 2027' को अभूतपूर्व ऊर्जा प्रदान करेगी।'

चौधरी ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व को इस विजय का आधार बताते हुए इसे देश में विकास, सुशासन और विश्वास की राजनीति की जीत बताया।

उन्होंने कहा, "भाजपा कार्यकर्ता केवल चुनाव के समय नहीं, बल्कि साल के 365 दिन जनता की सेवा में समर्पित रहते हैं। हमारा संकल्प है कि 'डबल इंजन' सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को धरातल तक शत-प्रतिशत पहुंचाया जाए।"

उन्होंने कहा, "बंगाल और असम का यह परिणाम तो केवल ट्रेलर है, उप्र 2027 में सुशासन की 'हैट्रिक' के साथ पूरी पिक्चर अभी बाकी है!"

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि उत्तर प्रदेश में भी संगठन को और सशक्त बनाते हुए 'मिशन 2027' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्यकर्ता पूरी ऊर्जा के साथ जुटे हैं।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भाजपा आने वाले समय में और अधिक मजबूती के साथ जनता की सेवा करती रहेगी।

बयान के अनुसार प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने पश्चिम बंगाल, असम एवं पुडुचेरी में भाजपा की विजय पर बधाई देते हुए कहा कि यह परिणाम राष्ट्रवाद और विकास के प्रति जनता के अटूट विश्वास का प्रमाण है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भाजपा ने देशभर में जनसेवा और पारदर्शी शासन का जो मॉडल प्रस्तुत किया है, उसी का परिणाम है कि जनता ने एक बार फिर भाजपा को अपना समर्थन दिया है।

'पीएम मोदी के नेतृत्व में सोनार बांग्ला बनेगा पश्चिम बंगाल', बोले सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री रामदास आठवले

रामदास आठवले ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल को 'सोनार बांग्ला' बनाया जाएगा, जहां हर नागरिक को रोजगार, सुरक्षा और सम्मान मिलेग .

(जीएनएस)।

नई दिल्ली। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री रामदास आठवले ने कहा कि आने वाले दिनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में सोनार बांग्ला बनाने का काम किया जाएगा, जहां हर नागरिक को रोजगार, सुरक्षा, और सम्मान प्रदान कर तथा बंगाली अस्मिता को पुनः स्थापित कर सोनार बांग्ला को चरितार्थ किया जाएगा।

रामदास आठवले ने कहा कि पीएम मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में देश की जनता का विश्वास लगातार मजबूत हुआ है, जिसका प्रमाण विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में प्राप्त जनादेश है और यह विजय प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के संकल्प को और मजबूत करती है तथा राष्ट्र के विकास-पथ को नई गति देती है।

आठवले ने कहा कि विगत अनेक

वर्षों से भर्ती घोटालों और भ्रष्टाचार से जनता की नाराजगी, महिलाओं की सुरक्षा पर उठते सवाल, और केंद्र की विभिन्न योजनाओं का लाभ राज्य में न मिलने से उपजा असंतोष ही टीएमसी की करारी हार का मुख्य कारण बना है।

आठवले ने कहा कि आम जनता ने सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के खिलाफ मतदान के माध्यम से टीएमसी को आईना दिखाने का काम किया है। रामदास ने कहा कि राज्य में बीजेपी की सरकार बनने के पश्चात इस प्रकार की घटनाओं पर विराम लगना तय है।

केंद्रीय राज्यमंत्री रामदास आठवले ने कहा कि यह विजय यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व, गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन के मार्गदर्शन में विकास, सुशासन और 'डबल इंजन की सरकार' पर जनता के अटूट विश्वास की स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

आठवले ने माननीय प्रधानमंत्री, गृह मंत्री अमित शाह व भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन को बधाई देते हुए कहा कि आरपीआई ने पश्चिम बंगाल की सभी सीटों पर भाजपा व एनडीए प्रत्याशियों का पूर्ण रूप से समर्थन किया था और पश्चिम बंगाल में भाजपा की जीत हम सभी के लिए असीम प्रसन्नता और गौरव का विषय है।

आठवले ने कहा कि मुझे विश्वास है कि भाजपा के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल विकास और समृद्धि की नई ऊंचाइयों को स्पर्श करते हुए विकसित राज्य बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर होगा।

आठवले ने कहा कि पश्चिम बंगाल में अभूतपूर्व प्रदर्शन, असम में लगातार तीसरी बार की जीत तथा पुडुचेरी में पुनः भाजपा-एनडीए सरकार का गठन, जनता के विकास और सुशासन के प्रति निरन्तर बढ़ते विश्वास को दशार्ता है।

बेकाबू स्विफ्ट डिजायर ने पहले से हुई दुर्घटना में मदद के लिये पहुंचे 8 लोगों को रौंदा, मदद कैसे बनी मौतों का जाल?

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश के अंबेडकरनगर जिले में रविवार रात करीब 12 बजे एक ऐसा हादसा हुआ, जिसने पूरे इलाके को स्तब्ध कर दिया। दो मोटरसाइकिलों की आमने-सामने की टक्कर के बाद घायलों की मदद के लिए इकट्ठा हुए लोगों को तेज रफ्तार स्विफ्ट डिजायर कार ने कुचल दिया। इस दर्दनाक घटना में कुल 8 लोगों की मौत हो गई। हादसा जिला मुख्यालय से करीब 30 किलोमीटर दूर जलालपुर कोतवाली क्षेत्र के अकबरपुर मार्ग पर अशरफपुर भुवा भट्ठे (ईंट भट्ठा) के पास हुआ।

यह सिर्फ एक सड़क दुर्घटना नहीं, बल्कि चेन रिएक्शन एक्सीडेंट का क्लासिक उदाहरण है कि जहां एक छोटी गलती ने मानवीय सहानुभूति को मौत में बदल दिया। पुलिस और प्रशासन अब इसकी जांच कर रहे हैं, लेकिन प्रारंभिक रिपोर्ट्स में तेज रफ्तार और बेकाबू गाड़ी को मुख्य वजह बताया जा रहा है। आइए विस्तार से जानते हैं...

हादसा कैसे हुआ? कैसे भयानक मोड़ आया?

3 मई की आधी रात को अकबरपुर-जलालपुर मार्ग पर दो मोटरसाइकिलें आमने-सामने टकरा गईं। दोनों बाइक सवार गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े। शोर सुनकर आसपास के गांवों के लोग ज्यादातर युवा और ग्रामीण मदद के लिए दौड़ पड़े। वे घायलों को उठाने, उन्हें सड़क के किनारे ले जाने और अस्पताल पहुंचाने की कोशिश कर रहे थे।

इसी बीच जलालपुर की ओर से आ रही एक स्विफ्ट डिजायर कार तेज रफ्तार में अनियंत्रित होकर मौके पर पहुंची। कार ने सड़क पर खड़े आधा दर्जन से ज्यादा लोगों को सीधे कुचल दिया। हादसे की तीव्रता इतनी थी कि कार आगे बढ़ते हुए सड़क के गड्ढे में गिरकर पलट भी गई।

स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस टीम ने घायलों को सीएचसी जलालपुर पहुंचाया। वहां डॉक्टरों ने 6 लोगों को मृत घोषित कर दिया। दो गंभीर घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल और फिर टांडा मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी भी मौत हो गई। इस तरह कुल मौतों का आंकड़ा 8 हो गया।

मृतकों की पहचान: ज्यादातर युवा, एक किशोर भी शामिल

पुलिस ने अब तक 6 मृतकों की पहचान कर ली है। ये सभी अंबेडकरनगर जिले के विभिन्न गांवों के निवासी थेः

कैफी (32 वर्ष), सैदापुर निवासी

उत्तम कुमार (24 वर्ष), कटका सेमरा निवासी

आदित्य कुमार (25 वर्ष), सम्मनपुर जैना निवासी

लालचंद (24 वर्ष), जलालपुर पट्टी मोईन निवासी

राजू गुप्ता (32 वर्ष), सम्मनपुर सिकंदरपुर निवासी

छोटू उर्फ दिव्यांश (14 वर्ष), सम्मनपुर जैना निवासी

दो अन्य मृतकों की पहचान अभी चल रही है। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिए गए हैं। पूरे इलाके में मातम का माहौल है। 14 वर्षीय दिव्यांश की मौत ने परिवार को बुरी तरह झकझोर दिया है।

हादसे का कारण, तेज रफ्तार या और कुछ?

प्रशासन और पुलिस की प्रारंभिक जांच के अनुसार कार की तेज रफ्तार मुख्य वजह थी। रात के अंधेरे में सड़क पर गड्ढे, कम रोशनी और संभवतः ड्राइवर की लापरवाही ने मिलकर यह त्रासदी पैदा की। कार ड्राइवर के बारे में अभी कोई आधिकारिक जानकारी नहीं आई है। पुलिस ने मौके से गवाहों के बयान दर्ज किए हैं और एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ऐसी चेन दुर्घटनाएं क्यों होती हैं?

भारत में सड़क हादसे की सबसे बड़ी वजह ओवरस्पीडिंग है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार हर साल देश में 1.5 लाख से ज्यादा लोग सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाते हैं। उत्तर प्रदेश इनमें टॉप पर रहता है। अंबेडकरनगर जैसे ग्रामीण इलाकों में रात के समय ट्रैफिक कम होने का फायदा उठाकर कई ड्राइवर तेज रफ्तार पकड़ लेते हैं।

इस हादसे में तीन बड़े फैक्टर नजर आते हैं:

रात का समय और विजिबिलिटीः आधी रात को हेडलाइट्स के अलावा कोई रोशनी नहीं। बाइक टक्कर के बाद लोग सड़क के बीच में खड़े हो गए - जो खतरनाक था।

सड़क की स्थितिः अकबरपुर-जलालपुर मार्ग पर गड्ढे आम हैं। कार इन्हीं गड्ढों में फंसकर अनियंत्रित हुई।

मानवीय सहानुभूति का दुरुपयोगः घायलों की मदद करना अच्छा है, लेकिन सड़क पर भीड़ लगाना ट्रैफिक नियमों के खिलाफ है। डायल 112 या एंबुलेंस बुलाना चाहिए था।

पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों ने कहा है कि जांच पूरी होने के बाद ड्राइवर के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। अगर नशा या मोबाइल फोन इस्तेमाल पाया गया तो क्ढउ की धारा 304अ (लापरवाही से मौत) के साथ अन्य धाराएं भी जोड़ी जाएंगी।

अंबेडकरनगर में सड़क सुरक्षाः लगातार बढ़ते हादसे

यह हादसा जिले का पहला नहीं है। बीते कुछ महीनों में अंबेडकरनगर में कई बड़े एक्सीडेंट हो चुके हैं। तेज रफ्तार, ओवरलोडिंग और खराब सड़कें यहां की आम समस्या हैं। जिला प्रशासन ने पहले भी कई बार चेतावनी दी थी, लेकिन रात के समय पेट्रोलिंग कमजोर रहती है।

सरकार की ओर से पूर्वांचल एक्सप्रेसवे जैसे प्रोजेक्ट्स चल रहे हैं, लेकिन ग्रामीण मार्ग अभी भी उपेक्षित हैं। सड़क किनारे ईंट भट्ठों और गांवों की वजह से ट्रैफिक अनियमित रहता है।

अंतिम सवालः क्या हम सड़क दुर्घटनाओं को रोक सकते हैं?

अंबेडकरनगर का यह हादसा सिर्फ आंकड़ों का नहीं, बल्कि इंसानी लापरवाही का शिकार है। तेज रफ्तार, खराब सड़क और मदद के नाम पर सड़क पर भीड़ - तीनों ने मिलकर 8 जिंदगियां छीन लीं।

बंगाल में काउंटिंग से पहले भारी बवाल! भवानीपुर में भिड़े टीएमसी और भाजपा एजेंट, बगैर आईकार्ड मतगणना स्थल में घुसने पर हुआ हंगामा

(जीएनएस)।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 के नतीजों का दिन आ गया है। पूरे देश की नजर आज बंगाल पर टिकी हुई है, जहां ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस (TMC) और भारतीय जनता पार्टी (BJP) के बीच जबरदस्त मुकाबला देखने को मिल रहा है। सुबह 8 बजे से 293 विधानसभा सीटों पर मतगणना शुरू होगी।

कोलकाता के भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र स्थित सखावत मेमोरियल स्कूल के बाहर मतगणना शुरू होने से पहले ही माहौल गरमा गया। यहां TMC और बीजेपी के काउंटिंग एजेंट्स के बीच तीखी बहस देखने को मिली।

बिना ID कार्ड के अंदर जाने की कोशिश

बीजेपी के एक काउंटिंग एजेंट ने आरोप लगाया कि TMC एजेंट बिना ID कार्ड के अंदर जाने की कोशिश कर रहे हैं। उनका कहना है कि बीजेपी एजेंट्स नियमों का पालन कर रहे हैं, लेकिन बेवजह विवाद खड़ा किया जा रहा है। उन्होंने दावा किया

कि बीजेपी बंगाल में बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है।

TMC कार्यकर्ताओं ने लगाए भेदभाव के आरोप

वहीं TMC कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि उन्हें फाइल और पेन अंदर ले जाने से रोका जा रहा है, जबकि बीजेपी एजेंट्स को इसकी अनुमति दी जा रही है। एक TMC कार्यकर्ता ने कहा कि नियम सभी के लिए एक जैसे होने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि 'हम ममता बनर्जी के लोग हैं और इससे बड़ी कोई पहचान नहीं है।'

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष का बड़ा दावा

पश्चिम बंगाल में बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने मतगणना शुरू होने से पहले बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि यह चुनाव 'जनता बनाम ममता' बन चुका है और लोगों ने ळटउ को नकार दिया है। उनके मुताबिक कुछ घंटों में बीजेपी सरकार बनाने की स्थिति में होगी।

मतगणना पर टिकी नजर

अब सबकी नजर मतगणना पर टिकी हुई है। शुरूआती रुझानों से यह साफ होने लगेगा कि बंगाल में सत्ता की कुर्सी किसके हाथ जाने वाली है। रिकॉर्ड मतदान और हाई-वोल्टेज प्रचार के बाद आज का दिन बंगाल की राजनीति के लिए बेहद अहम माना जा रहा है।

इस बार पश्चिम बंगाल में दो चरणों में मतदान कराया गया था। पहला चरण 23 अप्रैल और दूसरा चरण 29 अप्रैल को हुआ। चुनाव में 92.93% फीसदी मतदान दर्ज किया गया, जिसे राज्य के चुनावी इतिहास में बेहद अहम माना जा रहा है। बंगाल में पहले चरण में 93.19% और दूसरे चरण में 92.67% वोटिंग हुई। भारी मतदान के बाद राजनीतिक दलों के बीच उत्साह और तनाव दोनों बढ़े हुए हैं।

मौसम का डबल अटैक! चेन्नई में पारा 40°C पार, आईएमडी ने जारी किया बारिश का अलर्ट

(जीएनएस)।

तमिलनाडु की 234 विधानसभा सीटों पर आज हो रही मतगणना ने पूरे राज्य का सियासी पारा सातवें आसमान पर पहुंचा दिया है। लेकिन इस चुनावी सरगर्मी के बीच कुदरत का मिजाज भी कुछ कम गर्म नहीं है।

राजधानी चेन्नई समेत राज्य के कई हिस्से इस समय भीषण गर्मी और 'प्री-मानसून' के डबल अटैक का सामना कर रहे हैं। 4 मई को राज्य की जनता अगले पांच साल की सरकार का फैसला सुनने को बेताब है, तब चेन्नई में गर्मी ने साल का अब तक का सारा रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

चेन्नई में टूटा गर्मी का रिकॉर्डः 40.6°C पर पहुंचा पारा

मई महीने की शुरूआत के साथ ही चेन्नई में 'हीटवेव' जैसे हालात बन गए हैं। रविवार को चेन्नई के मीनमबक्कम (Mee»»fÔmbÔkkÔm) मौसम केंद्र ने 40.6 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया, जो इस साल का अब तक का सबसे गर्म दिन रहा।

भले ही आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए रहे, लेकिन उमस (Humidity) का स्तर 58% के करीब होने के कारण लोगों को भारी बेचैनी का सामना करना पड़ा। केवल दिन ही नहीं, बल्कि रात का तापमान भी 29-30 डिग्री के आसपास बना हुआ है, जिससे सूर्यास्त के बाद भी राहत नहीं मिल रही है।

भीतरी इलाकों में 'आग' जैसे हालातः वेल्लोर 42.8°C के पार

चेन्नई से दूर तमिलनाडु के भीतरी जिलों में गर्मी और भी विकराल रूप ले चुकी है। वेल्लोर में रविवार को पारा 42.8 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुँचा। कई जिलों में तापमान सामान्य से 2-3 डिग्री अधिक दर्ज किया गया है। मदुरै एयरपोर्ट पर न्यूनतम तापमान 21.1 डिग्री रहा, जो मैदानी इलाकों में सबसे कम था।

चुनावी नतीजों के बीच बारिश की दस्तकः IMD का 'येलो अलर्ट' जारी

एक तरफ जहां पूरा राज्य तप रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ इलाकों में इंद्रदेवमेहरबान हुए हैं। उत्तर तमिलनाडु के जिलों जैसे तिरुवल्लूर और रानीपेट में हल्की बारिश और गरज के साथ छींटें पड़े हैं। अराकोणम के आसपास के इलाकों में धूल भरी आंधी और बारिश ने गर्मी से मामूली राहत दी है।

मौसम विभाग (IMD) ने पश्चिमी घाट से सटे जिलों जैसे कोयंबटूर, नीलगिरी, थेनी और डिंडीगुल के लिए भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। अगले 48 घंटों में तमिलनाडु और पुडुचेरी के अलग-अलग हिस्सों में 40-50 किमी/घंटा की रफ्तार से हवाएं चलने और बिजली गिरने की संभावना जताई गई है।

राहत की खबर 2 दिन बाद गिरेगा तापमान

चेन्नईवासियों के लिए मौसम वैज्ञानिकों ने थोड़ी राहत की उम्मीद जताई है। अगले दो दिनों के बाद तापमान में 3 डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट आ सकती है। दिन का अधिकतम तापमान 40त्उ से घटकर 37-38त्उ के आसपास स्थिर होने का अनुमान है। मैदानी इलाकों की तपिश के अलग तमिलनाडु के हिल स्टेशनों का नजारा बिल्कुल अलग है। कोडाईकनाल में न्यूनतम तापमान 9.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो राज्य का सबसे ठंडा स्थान रहा।

RNI No.: UPHIN/25/A1698 Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : VINOD KUMARI
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सम्पादकीय

प्रसाद में मिलावट घोटाला करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का मजाक बनाता है

लड्डू प्रसाद में मिलावट का सचः आस्था, व्यवस्था और जवाबदेही पर गहरा सवाल, यह मामला केवल घी की गुणवत्ता या खरीद प्रव्रिया तक सीमित नहीं है बल्कि यह उस व्यापक प्रश्न से जुड़ा है कि क्या हम अपनी आस्था से जुड़े संस्थानों में भी उतनी ही सख्ती और पारर्दशिता सुनिाित कर पा रहे हैं जितनी अन्य सार्वजनिक संस्थानों में अपेक्षित होती है। यदि इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक है तो यह समय है। आंध्र प्रदेश के तिरुमला तिरुपति देवस्थानम में लड्डू प्रसाद के लिए घी खरीद में सामने आया कथित घोटाला केवल एक प्रशासनिक अनियमितता का मामला नहीं है बल्कि यह करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था, धरमिक संस्थानों की विश्वसनीयता और सार्वजनिक व्यवस्था की पारर्दशिता पर गंभीर सवाल खड़ा करता है। मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं होता बल्कि वह विश्वास, परंपरा और भावनात्मक जुड़ाव का वेंद्र होता है। ऐसे में जब प्रसाद जैसी पवित्र मानी जाने वाली वस्तु में मिलावट की आशंका सामने आती है तो उसका असर सिर्प स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता बल्कि यह आस्था की नींव को भी हिला देता है। जांच समिति की रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया कि लगभग सत्तर लाख किलोग्राम घी बिना अनिवार्य गुणवत्ता परीक्षण के खरीदा गया और कई मामलों में लैब रिपोर्ट आने से पहले ही उसका उपयोग प्रसाद बनाने में कर लिया गया। यह स्थिति किसी एक स्तर की चूक नहीं बल्कि एक पूरी व्यवस्था की विफलता को दशार्ती है जिसमें नियमों की अनदेखी, निगरानी की कमी और संभावित मिलीभगत शामिल हो सकती है। जब किसी धरमिक संस्था में इतनी बड़ी मात्रा में सामग्री का उपयोग हो रहा हो तो उसके हर चरण पर सख्त नियंत्रण और पारर्दशिता अपेक्षित होती है। रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि अगस्त 2022 की लैब जांच में सैंपलों में सिटोस्टेरॉल की मौजूदगी पाई गई जो वनस्पति तेल की मिलावट का संकेत माना जाता है। इसके बावजूद समय पर कार्रवाई नहीं की गई और सप्लायर्स को ब्लैकलिस्ट करने जैसे कदम नहीं उठाए गए। यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब मिलावट के संकेत स्पष्ट थे तो जिम्मेदार अधिकारियों ने तत्काल कदम क्यों नहीं उठाए। इससे यह संदेह गहराता है कि कहीं न कहीं प्रणाली में गंभीर खामियां या जानबूझकर की गई लापरवाही मौजूद थी। खरीद प्रव्रिया में भी कई ऐसी बातें सामने आईं जो चिता बढ़ाती हैं। असामान्य रूप से कम बोली स्वीकार करना, नीलामी के बाद अनौपचारिक बातचीत के जरिए कीमत कम करने की अनुमति देना और गुणवत्ता मानकों की अनदेखी करना यह दशार्ता है कि आर्थिक लाभ को प्राथमिकता दी गई जबकि गुणवत्ता और सुरक्षा को नजरअंदाज किया गया। शुद्ध घी की कीमत और बाजार की वास्तविकता को देखते हुए अत्यधिक कम कीमत पर सप्लाई होना अपने आप में संदेह पैदा करता है। इस पूरे मामले में एक संगठित नेटवर्व के काम करने की आशंका भी जताई गई है जिसमें सप्लायर, बिचौलिये और वुछ संस्थागत तत्व शामिल हो सकते हैं। रिपोर्ट के अनुसार एक प्रमुख सप्लायर ने वनस्पति तेल और अन्य एडिटिव्स का उपयोग कर मिलावटी घी तैयार किया और अयोग्य घोषित होने के बाद भी वह अन्य माध्यमों से सप्लाई जारी रखने में सफल रहा। यह स्थिति दशार्ती है कि निगरानी प्रणाली में गंभीर कमजोरियां थीं और नियमों को लागू करने में इच्छाशक्ति की कमी थी। पूर्व अधिकारियों और खरीद समिति की भूमिका पर भी सवाल उठे हैं। रिपोर्ट में आरोप लगाए गए हैं कि टेंडर नियमों को कमजोर किया गया और मिलावट की पुष्टि के बावजूद सख्त कार्रवाई नहीं की गई। हालांकि संबंधित पक्षों का कहना है कि सभी निर्णय सामूहिक रूप से लिए गए और नियमों के तहत ही प्रव्रिया अपनाई गई। यह विवाद अपने आप में इस बात का संकेत है कि पारर्दशिता और जवाबदेही को लेकर स्पष्टता का अभाव था। यह मुद्दा केवल एक राज्य या एक मंदिर तक सीमित नहीं है बल्कि यह पूरे देश के धरमिक संस्थानों के लिए एक चेतावनी है। भारत में मंदिरों में प्रसाद वितरण की परंपरा बहुत पुरानी है और यह श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत पवित्र मानी जाती है।

सत्ता को सिर्फ विरोधी नहीं हराते, भरोसा ज्यादा मायने रखता है

2026 के चुनाव नतीजे बताते हैं–भारतीय वोटर पहले से बदलाव का ऐलान नहीं करता. वह शोर सुनता है, संकेत समझता है, मानता हुआ दिखता है और फिर वोट की गोपनीयता में अपना फैसला बदल देता है.

(जीएनएस)।

भारत में सत्ता इसलिए नहीं गिरती कि कोई दूसरा विकल्प मजबूत हो गया. सत्ता तब गिरती है, जब लोगों का भरोसा कम होने लगता है और उसी चुपचाप घटते भरोसे में नया विकल्प आकार लेता है.

राजनीति चालाक हो सकती है. नेता उससे भी ज्यादा चालाक होते हैं, लेकिन जब सही समय आता है, तो जनता दोनों को चौंका देती है. वह बहस नहीं करती, वह पहले से कुछ घोषित नहीं करती, वह बस अपना भरोसा वापस ले लेती है और इसी में धीरे-धीरे बड़ी-बड़ी राजनीतिक धारणाएं, जो बार-बार दोहराई जाती हैं, टूटने लगती हैं.

चुनाव 2026 में 2024 की झलक दिखी. माहौल ऐसा था जैसे सब पहले से तय हो. पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की वापसी मानी जा रही थी, भले थोड़ी कमजोर हो. तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) एंटी-इनकंबेंसी के बावजूद टिके रहने वाली थी. केरल में वही पुराना पैटर्न चलता दिख रहा था और असम में कहानी हिमंता बिस्वा सरमा के आसपास ही मजबूत होती दिख रही थी, जहां विपक्ष की आवाज पीछे छूटती नजर आ रही थी.

सब कुछ तय सा लग रहा था और अक्सर यही वह समय होता है, जब जमीन खिसकने लगती है.

भारतीय वोटर शायद ही कभी पहले से बदलाव का संकेत देता है. वह सब कुछ देखता-सुनता है, समझता है, मानता हुआ दिखता है और फिर वोट डालते समय चुपचाप अपना फैसला बदल देता है. एक बार फिर, 2026 में जनता ने सिर्फ भाग नहीं लिया, बल्कि दखल दिया और भारतीय राजनीति के सबसे बड़े सवाल 'विकल्प कहां है?' को चुपचाप खत्म कर दिया. इसका जवाब पहले से नहीं बताया गया, बल्कि तब सामने आया जब मौजूदा व्यवस्था पर भरोसा कम होने लगा.

बंगाल की स्थिति

सबसे पहले, पश्चिम बंगाल. दो साल से राज्य में एक हलचल सी थी. इतनी तेज नहीं कि उसे लहर कहा जाए, लेकिन इतनी लगातार कि उसे नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता. लोकसभा चुनाव के दौरान, यह हलचल कुछ और साफ और मजबूत होती दिखी, एक तरह की जिज्ञासा, यहां तक कि बीजेपी को परखने की कोशिश और नहीं, यह सिर्फ 'गैर-बंगाली' वोटर की चिंता नहीं थी.

यह खुद बंगाल के अंदर से आ रहा था, गांवों से लेकर शहरों के

महत्वाकांक्षी वर्ग तक. यहां तक कि भद्रलोक भी, अपने संभले और थोड़े झिझक भरे तरीके से, इसे महसूस करने लगे थे, लेकिन महसूस करना और उसमें शामिल होना अलग बात है. वे इस बदलाव को समझ रहे थे, लेकिन पूरी तरह भरोसा नहीं कर पा रहे थे.

सीधी बात यह है कि पश्चिम बंगाल बेचैन हो रहा था. यह झिझक तब तक रही, जब तक रही क्योंकि बंगाल में जो हो रहा था, वह सिर्फ एंटी-इनकंबेंसी नहीं था. यह कुछ ज्यादा शांत, लेकिन ज्यादा निर्णायक चीज थीः मोहभंग. पंद्रह साल का समय इतना होता है कि उम्मीद थकान में बदल जाए. ममता बनर्जी के उभार के साथ जो बदलाव और नएपन का वादा था, वह अब लगातार चलने वाली स्थिति बन गया था. सत्ता बनी रही, कुछ जगहों पर डर भी था, लेकिन भरोसा कम होने लगा था.

2024 के आसपास, लोगों का नजरिया बदलने लगा. संयम ढीला पड़ा और असंतोष ने अपनी आवाज और हिम्मत पाई, न विचारधारा में, न भाषणों में, बल्कि रोजमर्रा की ज़िंदगी में. 'यहां हमारे लिए कुछ नहीं है, इसलिए हमें बाहर जाकर काम करना पड़ता है.' इस बात में कोई दिखावा नहीं था, बस हालात का बोझ था.

कोलकाता में घूमते हुए, शहर में भी वही स्थिति दिखती थी. इसकी खूबसूरती, औपनिवेशिक इमारतें, विक्टोरिया का इलाका, सब बरकरार है, लेकिन उसके पीछे एक ठहराव सा महसूस होता है, जैसे शहर रुक गया हो जबकि बाकी आगे बढ़ रहे हैं. मुझे पटना पहुंचकर इसका उल्टा महसूस हुआ कि एक ऐसी जगह जो अभी भी संघर्ष कर रही है, लेकिन बदलाव और आगे बढ़ने की कोशिश साफ दिखती है.

इसलिए ममता का कमजोर होना अचानक नहीं हुआ. यह धीरे-धीरे संकेतों में दिखा. लोकसभा के नतीजों में, पहले के चुनावी इशारों में ऐसे संकेत जो जमा होते रहे, लेकिन पूरी तरह समझे नहीं गए. सत्ता जब लंबे समय तक रहती है, तो उसमें एक तरह की अंधता आ जाती है. उसे लगता है कि संकेत सिर्फ शोर हैं.

जो नहीं समझा गया, वह विपक्ष नहीं था. जो नहीं समझा गया, वह भरोसे का कम होना था, खासकर उस पीढ़ी में, जिसने बाहर की दुनिया बहुत देख ली है और अब सीमाओं को स्वीकार नहीं करना चाहती. वे विचारधारा नहीं मांग रहे थे. उनकी मांग सीधी थी, आगे बढ़ना, आर्थिक, सामाजिक और अपने सपनों के हिसाब से.

नतीजों के बाद, हमेशा की तरह बहस होगी—संस्थाओं पर आरोप, रक्क़ और चुनाव आयोग पर सवाल, गड़बड़ी की बातें. लेकिन यह सिर्फ ऊपर की बात होगी, क्योंकि अंदर की सच्चाई ज्यादा सीधी हैः नतीजों से पहले ही बंगाल बदलना शुरू हो चुका था.

एक ऐसा राज्य जो दशकों तक वामपंथ की ओर झुका रहा, वह धीरे-धीरे कहीं और देखने लगा था—सिर्फ पार्टी के स्तर पर नहीं, बल्कि सोच के स्तर पर भी. वह तेज रफ्तार और देश की बड़ी विकास कहानी में शामिल होना चाहता था.

असम से तमिलनाडु तक

2026 के राज्य चुनावों का संदेश साफ है. भारत में सत्ता तब नहीं गिरती जब उसे चुनौती मिलती है. वह तब गिरती है, जब लोग उस पर भरोसा करना छोड़ देते हैं.

और यह पैटर्न सिर्फ बंगाल तक सीमित नहीं है. तमिलनाडु में नए विकल्पों पर विचार हो रहा है. केरल में वोटर लगातार बदलाव करता रहता है. यह बेचैनी हमेशा दिखती नहीं, लेकिन होती जरूर है.

यहीं एक शांत चेतावनी छिपी है. यह इतनी तेज नहीं कि डर पैदा करे, न इतनी हल्की कि उसे नकारा जा सके, लेकिन इसकी दिशा साफ है. भारत में सत्ता को अक्सर विरोधी नहीं हराते; वह अपने ही भरोसे के धीरे-धीरे खत्म होने से हारती है. जब तक यह साफ दिखता है, तब तक वोटर चुपचाप अपना फैसला बदल चुका होता है—पूरी तरह और निश्चित रूप से.

साउथ में एक्टर्स का दबदबा क्यों? कब-कौन बना सीएम? विजय की टीवीके पार्टी इतिहास रचने की ओर

(जीएनएस)।

दक्षिण भारत की राजनीति में फिल्मी सितारों का दबदबा कोई नया ट्रेंड नहीं, बल्कि दशकों पुरानी परंपरा है। यहां सिनेमा सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि सामाजिक बदलाव और राजनीतिक विचारधारा का सबसे ताकतवर हथियार बना। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में एक्टर्स ने स्क्रीन पर दिखाई गई 'मसीहा' वाली छवि को असल जिंदगी में ले जाकर मुख्यमंत्री पद तक पहुंचाया। फैन क्लब वोट बैंक में बदल गए, गरीबों के रक्षक किरदार राजनीतिक एजेंडा बन गए और क्षेत्रीय गौरव की भावना ने इन स्टार्स को जनता का चहेता बना दिया।

1950-70 के दशक में दक्षिण भारत में सिनेमा ने राजनीति में एंट्री मारी। खासकर तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन ने फिल्मों को अपना हथियार बनाया। फिल्मों के नायक गरीबों के रक्षक, अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले और सिस्टम से टकराने वाले दिखाए जाते थे। यही छवि बाद में वोट में बदल गई। आज भी थलापति विजय जैसी नई पीढ़ी इसी ट्रेंड को आगे बढ़ा रही है। आइए जानते हैं उन ऐतिहासिक एक्टर्स का सफर, जिन्होंने स्क्रीन से सीधे सत्ता तक पहुंच बनाई... 'एक्टर से सीएम' मॉडल की प्रयोगशाला

तमिलनाडु इस मॉडल का सबसे बड़ा उदाहरण है। यहां सिनेमा और द्रविड़ राजनीति का गहरा रिश्ता रहा।

M.G. रामचंद्रन (MGR)

दक्षिण भारत में 'एक्टर से मुख्यमंत्री' का रास्ता बनाने वाले पहले नाम MGR हैं। 17 जनवरी 1917 को श्रीलंका के कांडी में जन्मे मरुदुर गोपालन रामचंद्रन का बचपन गरीबी में बीता। परिवार तमिलनाडु शिफ्ट हुआ। स्कूल छोड़कर उन्होंने 1936 में फिल्मों में एंट्री की। 135 से ज्यादा फिल्मों में काम किया, ज्यादातर तमिल में। स्क्रीन पर वे गरीबों के मसीहा बने, फुर कैप, सनग्लासेस और सादगी भरी छवि।

1972 में उन्होंने AIADMK की स्थापना की। 1977 में पहली बार मुख्यमंत्री बने। 1977 से 1987 तक लगातार तीन बार (कुल 10 साल) सत्ता संभाली। मिड-डे मील जैसी योजनाओं से गरीबों को जोड़ा। जनता को लगता था कि जो स्क्रीन पर मदद करता है, वही असल जिंदगी में भी करेगा। 24 दिसंबर 1987 को निधन के बाद उन्हें भारत रत्न (1988) से सम्मानित किया गया। उनके अंतिम संस्कार में 20 लाख से ज्यादा लोग शामिल हुए। MGR ने साबित किया कि फिल्मी छवि को राजनीतिक ब्रांड में बदला जा सकता है।

जयललिता जयराम

MGR की राजनीतिक वारिस और उनकी फिल्मी जोड़ी की सबसे बड़ी हिस्सेदार। 24 फरवरी 1948 को जन्मीं जयललिता ने 140 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, हर भाषा में छाईं। 'क्वीन ऑफ तमिल सिनेमा' कहलाईं। MGR के साथ 28 फिल्मों में जोड़ी बनी। 1991 में पहली बार CM बनीं।

'अम्मा' के नाम से मशहूर हुईं। अम्मा कैंटीन, अम्मा पानी जैसी योजनाओं से गरीब महिलाओं और बच्चों तक सीधा पहुंच बनाई। 1991 से 2016 तक कुल 6 बार (14 साल से ज्यादा) मुख्यमंत्री रहीं। कई बार सत्ता से बाहर हुईं, लेकिन हर बार वापसी की। उनकी राजनीति ने दिखाया कि एक अभिनेत्री भी लंबे समय तक सत्ता संभाल सकती है। 5 दिसंबर 2016 को निधन हुआ, लेकिन 'अम्मा' वाली छवि आज भी तमिलनाडु की राजनीति में जिंदा है।

एम. करुणानिधि

करुणानिधि बड़े फिल्म स्टार नहीं थे, लेकिन तमिल सिनेमा के सबसे प्रभावशाली स्क्रिप्ट राइटर थे। उन्होंने सिनेमा को राजनीतिक विचारधारा फैलाने का टूल बनाया। उटड के संस्थापक अन्नादुरै के साथ मिलकर द्रविड़ आंदोलन को मजबूत किया। फिल्मों के लिए स्क्रिप्ट लिखीं, जैसे राजकुमारी और पराशक्ति।

5 बार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री रहे। कुल 19 साल सत्ता में रहे। उनके लेखन ने तमिल गौरव, सामाजिक न्याय और सुधार को जन-जन तक पहुंचाया। करुणानिधि ने साबित किया कि स्क्रीन के पीछे से भी राजनीति लिखी जा सकती है।

एमके स्टालिन

मौजूदा मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने युवावस्था में टीवी और फिल्मों में छोटे रोल किए। 1980 के दशक में दो फिल्में, ओरे रथम (1987) और मक्कल आनै इत्ताल और टीवी सीरियल कुरिंजी मलर में काम किया। हालांकि उनका मुख्य करियर राजनीति में रहा, लेकिन यह उदाहरण दिखाता है कि सिनेमा-राजनीति का रिश्ता DMK परिवार में भी गहरा है। 2021 से वे मुख्यमंत्री हैं।

आंध्र प्रदेश-तेलंगानाः 'स्टार से सत्ता तक क्रांति'

एनटी रामाराव (NTR)

आंध्र प्रदेश में NTR का उदय किसी क्रांति से कम नहीं। 28 मई 1923 को जन्मे नंदमूरी तारक रामाराव ने 300 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। भगवान राम और कृष्ण जैसे पौराणिक किरदार निभाए। 1982 में Telugu Desam Party (TDP) बनाई। सिर्फ 9 महीने में 1983 में मुख्यमंत्री बने, कांग्रेस को हराकर। 'तेलुगु आत्मगौरव' का नारा दिया।

तीन बार (1983-84, 1984-89, 1994-95) उट रहे। रथ यात्रा निकालकर जनता से सीधा जुड़े। ठळफ ने क्षेत्रीय राजनीति को नया आयाम दिया। उनका मॉडल आज भी आंध्र की राजनीति में स्टार पावर का आधार है।

चिरंजीवी

मेगा स्टार चिरंजीवी ने 2008 में Praja Rajyam Party (PRP) बनाई। 2009 चुनाव में 18 सीटें जीतीं, लेकिन CM नहीं बने। 2011 में पार्टी कांग्रेस में विलय कर दी। 2012-2014 में केंद्रीय पर्यटन मंत्री रहे। चिरंजीवी का केस दिखाता है कि हर सुपरस्टार CM नहीं बन पाता, लेकिन उनका प्रभाव राजनीति को बदल सकता है।

पवन कल्याण

चिरंजीवी के छोटे भाई पवन कल्याण ने 2014 में जनसेना पार्टी बनाई। युवाओं और किसानों के मुद्दे उठाए। 2024 में TDP गठबंधन के साथ आंध्र प्रदेश के उप मुख्यमंत्री बने। पंचायत राज, ग्रामीण विकास, पर्यावरण और विज्ञान-प्रौद्योगिकी जैसे विभाग संभाले। यह साउथ में दुर्लभ उदाहरण है जहां एक बड़ा फिल्म स्टार डिप्टी CM बना। गठबंधन राजनीति में उनकी भूमिका आज भी अहम है।

साउथ की पॉलिटिक्स में एक्टर्स का दबदबा क्यों? 4 बड़े कारण

दक्षिण भारत में सिनेमा और राजनीति का रिश्ता दशकों पुराना है। यहां फिल्में सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक हथियार रही हैं।

1. सिनेमा = जनभावनाओं पर पकड़

तमिल, तेलुगु और कन्नड़ सिनेमा ने हमेशा गरीबों, किसानों और महिलाओं की कहानियां दिखाईं। हीरो को "मसीहा" की छवि मिली। MGR की फिल्मों में वे गरीबों के रक्षक बने, NTR ने तेलुगु गौरव का प्रतीक बनाया। जनता स्क्रीन पर देखा वही नेता असल जिंदगी में भी चाहती है।

2. फैन क्लब से वोट बैंक

स्टार्स के फैन क्लब रातोंरात राजनीतिक कार्यकताओं में बदल जाते हैं। विजय के फैंस की तरह MGR और जयललिता के फैन क्लब ने AIADMK को मजबूत किया।

71 साल की उम्र में भी डॉक्टर बनने की चाह, नीट एगजाम देने पहुंचे लखनऊ के अशोक बहार की कहानी

अशोक बहार खूब चर्चा में हैं. उनका कहना है कि वो एक दिन डॉक्टर जरूर बनेंगे और इसके लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं.

(जीएनएस)।

: उम्र को मात देते हुए कुछ कर दिखाने का जज्बा लखनऊ में दिखा जब हजारों युवा प्रतिभागियों के बीच एक 71 साल का बुजुर्ग डॉक्टर बनने के फौलादी इरादे से ठएएळ एग्जाम देने सेंटर पहुंचे. 71 साल के अशोक बहार पिछले कई साल मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए अटेम्प दे रहे हैं. इस बार का उनका अटेम्प्ट सालों बाद आया है. अशोक बहार ने ठउ्ळश को बताया कि ये सच है कि उनकी मां चाहती थी कि वो मै डॉक्टर बनें, क्यूंकि उनके पिता एक अच्छे डॉक्टर थे. इसी वजह से मेरी मां ने उनकी शादी एक डॉक्टर लड़की से करवाई थी, जिससे डॉक्टर्स फैमिली बढ़ती रहे.

पत्नी से मिली सीख

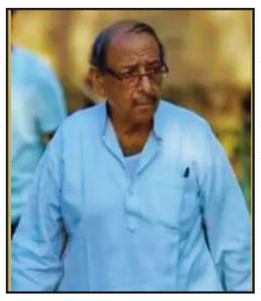

अशोक बहार ने बताया कि मेरी पत्नी एक गायनोलोजिस्ट है और ठ्लट में चीफ कंसल्टेंट पर सेवा दे चुकी हैं. बरसों बाद फिर मेडिकल एंट्रेंस की प्रेरणा मुझे मेरी पत्नी से मिली, मैं उनसे काफी कुछ इस क्षेत्र में लंबे समय से सीखता रहा हूं. अशोक बहार ने ठउ्ळश से बातचीत में बताया कि उनके पिता डॉ राम लाल बाहर लखनऊ में एक वरिष्ठ चिकित्सक थे, उनकी पत्नी मंजू बहार भी एक अच्छी गइनोलोजिस्ट डॉक्टर हैं.

डॉक्टरों की फैमिली से आते हैं अशोक बहार

अशोक बहार बताते हैं कि उनकी और उनकी पत्नी की फैमिली में करीब 20 डॉक्टर्स हैं, जिनमें 5-6 लोग देश के बाहर अपनी सेवाएं दे रहे हैं. अशोक बहार ने बताया कि वो डॉक्टर बनकर हेप्टोलॉजी में विशेष योगदान देना चाहते हैं. डॉ अशोक बहार के अनुसार लिवर कि समस्या महामारी की तरह फैली हुई है, जिसकी शुरूआत फैटी लिवर से होती है. अशोक बहार ने ग्रेजुएशन टाइम में भी कई मेडिकल एंट्रेंस अटेम्पट दिए लेकिन सफलता नहीं लगी. अशोक बहार उम्र के इस पड़ाव पर भी अपनी मां और खुद के सपने को पूरा करने में जुटे हैं.

अशोक बहार मिनिस्ट्री ऑफ केमिकल फर्टिलाइजर कळ्ढछ में वढ/वड मर्केटिंग हेड रह चुके हैं और श्फ्र के बाद इसी क्षेत्र में विदेश मंत्रालय में कंसल्टेंट के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं. फिलहाल उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही हैं, जिनमें वो नीट की परीक्षा देने के बाद एग्जाम सेंटर से बाहर आते दिख रहे हैं.

दिल्ली में मंथन, लखनऊ में हलचलः योगी मंत्रिमंडल में शामिल होंगे नए चेहरे, ब्राह्मण और दलित समीकरणों पर बीजेपी का दांव

पश्चिम बंगाल के चुनावी नतीजों के बाद अब भाजपा का पूरा ध्यान उत्तर प्रदेश पर टिक गया है. लखनऊ से दिल्ली तक बैठकों का दौर जारी है और माना जा रहा है कि 8 मई के आसपास योगी मंत्रिमंडल का विस्तार हो सकता है. इसमें जातीय समीकरणों को साधने की बड़ी तैयारी है.

(जीएनएस)।

भारतीय जनता पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए उत्तर प्रदेश में मंत्रिमंडल विस्तार की योजना बना रही है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कैबिनेट में यह बदलाव संभवतः 8 मई के आसपास होगा. भाजपा इस विस्तार के जरिए दलित, ओबीसी और ब्राह्मण मतदाताओं को साधने की कोशिश करेगी. पश्चिम बंगाल के चुनावों से मुक्त होकर अब पार्टी आलाकमान यूपी के क्षेत्रीय और जातीय समीकरणों को संतुलित करने में जुट गया है. इसमें सपा छोड़कर आए कुछ चेहरों और पुराने भाजपा दिग्गजों को जगह मिल सकती है. भाजपा महासचिव विनोद

तावड़े और नितिन नवीन लगातार फीडबैक लेकर दिल्ली में मंथन कर रहे हैं.

जातीय और क्षेत्रीय समीकरण पर जोर

मंत्रिमंडल विस्तार में भाजपा पश्चिम, ब्रज और अवध क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दे रही है. पश्चिम यूपी से दलित और गुर्जर-जाट समीकरण को दुरुस्त करने की कवायद है, जबकि ब्रज और अवध से ब्राह्मण चेहरों को तवज्जो दी जा सकती है. श्रीकांत शर्मा, पूजा पाल और सपा से बगावत करने वाले मनोज पांडे के नामों की चर्चा सबसे ज्यादा गर्म है. करीब एक दर्जन नए चेहरों को शामिल कर पार्टी हर वर्ग को प्रतिनिधित्व देना चाहती है.

मुद्दों से निपटने की कवायद

पार्टी के सामने यूजीसी बिल और बिजली मीटर को लेकर जनता का रोष एक बड़ी चुनौती बना हुआ है. माना जा रहा है कि मंत्रिमंडल विस्तार के जरिए भाजपा इन ज्वलंत मुद्दों से निपटने का फॉमूर्ला ढूंढने की कोशिश करेगी. चुनावी साल में जनता की नाराजगी दूर करना पार्टी की प्राथमिकता है. इसी सिलसिले में दोनों डिप्टी सीएम और प्रदेश के कई बड़े नेता लगातार दिल्ली का दौरा कर रहे हैं.

दिल्ली में चल रहा मंथन

पिछले एक महीने से भाजपा महासचिव विनोद तावड़े यूपी के नेताओं से फीडबैक ले रहे हैं. उन्होंने सीएम योगी और दोनों डिप्टी सीएम समेत पूर्व अध्यक्षों से मुलाकात की है. अगले 10 महीनों में होने वाले चुनावों को देखते हुए यह विस्तार बेहद निर्णायक माना जा रहा है. दिल्ली में बड़े नेताओं का जमावड़ा इस बात का संकेत है कि जल्द ही नए नामों पर मुहर लग सकती है.

क्या शादी करने जा रहीं हुमा कुरैशी? सामने आया सच, कौन है एक्ट्रेस का हमसफर?

(जीएनएस)।

बॉलीवुड की फेमस एक्ट्रेस हुमा कुरैशी एक बार फिर सुर्खियों में हैं लेकिन इस बार वजह उनकी फिल्म नहीं बल्कि पर्सनल लाइफ है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि हुमा कुरैशी जल्द ही शादी करने जा रही हैं। हालांकि अब तक इस खबर पर एक्ट्रेस या उनकी टीम की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि सामने नहीं आई है।

कौन हैं हुमा कुरैशी के 'स्पेशल वन'?

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हुमा कुरैशी का दिल सेलिब्रिटी फिटनेस ट्रेनर रचित सिंह (फ्रूँ३ ऱ्ल्लँ) पर आया है। रचित सिंह इंडस्ट्री के कई बड़े स्टार्स को ट्रेनिंग दे चुके हैं और बॉलीवुड सर्कल में अच्छी-खासी पहचान रखते हैं। दोनों को कई मौकों पर साथ देखा गया है, जिससे इनके रिश्ते को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। हालांकि दोनों ने अब तक अपने रिश्ते को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार नहीं किया है।

सोशल मीडिया और पब्लिक अपीयरेंस से बढ़ीं चचाएं

हुमा कुरैशी और रचित सिंह के बीच सोशल मीडिया पर भी खास बॉन्डिंग देखने को मिलती रही है। दोनों अक्सर एक-दूसरे की पोस्ट पर कमेंट करते नजर आते हैं। इसके अलावा कई इवेंट्स और आउटिंग्स में भी उन्हें साथ देखा गया,जिसने फैंस की उत्सुकता और बढ़ा दी है।

कब हो सकती है शादी?

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार ये कपल अक्तूबर 2026 के आखिर या नवंबर की शुरूआत में शादी के बंधन में बंध सकता है। खबरों की मानें तो शादी की तैयारियां भी धीरे-धीरे शुरू हो चुकी हैं। हालांकि अभी तक इसे लेकर कोई ऑफिशियल ऐलान नहीं किया गया है।

इंटिमेट वेडिंग प्लान, बाद में होगा ग्रैंड रिसेप्शन

सूत्रों के मुताबिक हुमा कुरैशी अपनी शादी को काफी निजी रखना चाहती हैं। वह इस खास मौके पर सिर्फ अपने करीबी दोस्तों और परिवार के लोगों को ही शामिल करने की योजना बना रही हैं। हालांकि शादी के बाद एक बड़ा रिसेप्शन आयोजित किया जा सकता है, जिसमें फिल्म इंडस्ट्री के कई बड़े स्टार्स शामिल हो सकते हैं।

फैंस को है आधिकारिक ऐलान का इंतजार

इन खबरों के सामने आने के बाद फैंस काफी उत्साहित हैं और अब सभी को हुमा कुरैशी की तरफ से आधिकारिक घोषणा का इंतजार है। अगर ये खबर सच साबित होती है, तो ये बॉलीवुड की चर्चित शादियों में से एक हो सकती है।

गृह जिले में तैनात नहीं होंगे समूह क के अधिकारी, यूपी कैबिनेट ने तबादली नीति में लिए ये फैसले

(जीएनएस)।

लखनऊ , योगी सरकार द्वारा मंजूर की गई तबादला नीति के तहत स्थानांतरण के लिए तीन साल और सात साल का कटऑफ अवधि 31 मार्च माना जाएगा। किसी विभाग का यदि जिले में कोई अन्य कार्यालय नहीं है तो कार्मिक का पटल या क्षेत्र का बदलाव 13 मई 2022 को जारी शासनादेश के आधार पर किया

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में सोमवार को प्रदेश कैबिनेट ने तबादला नीति 2026-27 को मंजूरी दे दी। इसके तहत समूह क के अधिकारियों को उनके गृह जिले में तैनात नहीं किया जाएगा। समूह क ऐसे अधिकारियों जिनके पद केवल मंडल स्तर पर हैं, उन्हें उनके गृह मंडल में तैनात नहीं किया जाएगा।

समूह ख के अधिकारियों को उनके गृह मंडल में तैनात नहीं किया जाएगा, यह प्रतिबंध केवल

जिलास्तरीय विभागों व कार्यालयों में लागू होंगे। समूह ग के सभी कार्मिकों का पटल, क्षेत्र परिवर्तन अनिवार्य रूप से किया जाएगा।

स्थानांतरण के लिए तीन साल और सात साल का कटऑफ अवधि 31 मार्च माना जाएगा। किसी विभाग का यदि जिले में कोई अन्य कार्यालय नहीं है तो कार्मिक का पटल या क्षेत्र का बदलाव 13 मई 2022 को जारी शासनादेश के आधार पर किया जाएगा।

नौ लाख कार्मिक दायरे में

विभागाध्यक्ष अपने मंत्रियों की सहमति से 31 मई तक कार्मिकों का स्थानांतरण कर सकेंगे। सेवानिवृत्ति में दो साल बचने वाले कार्मिकों को उनके गृह जिले में तैनाती पर विचार होगा। तबादला नीति के दायरे में नौ लाख से अधिक राज्य कर्मचारी आएंगे। तबादला नीति सचिवालय कर्मियों पर लागू नहीं होगा। विभागों द्वारा प्रशासनिक दृष्टि से पदोन्नति, सीधी भर्ती से नवनियुक्त पत्नी के सरकारी सेवा में होने के स्थानांतरण विकल्प के आधार पर मनचाहे स्थानों पर किया जाएगा।

सेवानिवृत्ति के दो साल तो इच्छित तैनाती में मिलेगी प्राथमिकता

दो साल में सेवानिवृत्त होने वाले समूह ग व घ के कार्मिकों को उनके गृह जिले व समूह क व ख के कार्मिकों को उनके गृह जिले को छोड़ते हुए इच्छित जिले में तैनाती करने पर यथासंभव विचार किया जाएगा। इसके लिए पूर्व में उस मंडल व जिले में उनकी तैनाती अवधि को संज्ञान में नहीं लिया जाएगा।

आरटीई : प्रवेश में पिछले चार साल का रिकॉर्ड टूटा, निजी स्कूलों में हुए 1.43 लाख से अधिक प्रवेश

(जीएनएस)।

लखनऊ , इस बार आवेदन प्रक्रिया को तीन चरणों में सीमित रखा गया और अधिकारियों के साथ लगातार बैठकें कर प्रगति की निगरानी की गई। इस वर्ष प्रदेश में प्रवेश प्रक्रिया ने पिछले चार वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत इस वर्ष प्रदेश में प्रवेश प्रक्रिया ने पिछले चार वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। बेसिक शिक्षा विभाग की सख्ती और नियमित समीक्षा के चलते सत्र 2026-27 में अब तक 1.43 लाख से अधिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों का निजी स्कूलों में प्रवेश कराया जा चुका है। कुल 1.95 लाख आवंटित सीटों के सापेक्ष यह संख्या उल्लेखनीय है और पिछले वर्ष के 1.40 लाख प्रवेश से अधिक है।

इस बार आवेदन प्रक्रिया को तीन चरणों में सीमित रखा गया और अधिकारियों के साथ लगातार बैठकें कर प्रगति की निगरानी की गई। अपर मुख्य सचिव पार्थ सारथी सेन शर्मा ने जिलास्तरीय अधिकारियों को हर आवंटित बच्चे का प्रवेश सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। समग्र शिक्षा के उपनिदेशक डॉ. मुकेश कुमार सिंह के अनुसार शेष बच्चों के प्रवेश के लिए भी तेजी से कार्य जारी है और लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास निरंतर जारी रहेंगे।

जनता दर्शन में सीएम योगी ने 200 लोगों की समस्याएं सुनीं, बोले- मत करें चिंता, हर समस्या का कराएंगे समाधान

(जीएनएस)।

गोरक्षनाथ/लखनऊ, गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन के दौरान सीएम योगी करीब 200 लोगों से मिले। महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने कुर्सियों पर बैठे लोगों तक मुख्यमंत्री खुद पहुंचे और उनकी समस्याएं सुनीं। उनके प्रार्थना पत्र लिए तथा समीप खड़े अफसरों को समस्या समाधान हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने मिलने आए लोगों को आश्वस्त करते हुए कहा, चिंता मत करिए, सरकार हर समस्या का प्रभावी समाधान कराएगी। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनता की समस्याओं पर त्वरित संवेदनशीलता दिखाते हुए पारदर्शी निस्तारण सुनिश्चित किया जाए।

मंगलवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन के दौरान सीएम योगी करीब 200 लोगों से मिले। महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने कुर्सियों पर बैठे लोगों तक मुख्यमंत्री खुद पहुंचे और उनकी समस्याएं सुनीं। उनके प्रार्थना पत्र लिए तथा समीप खड़े अफसरों को समस्या समाधान हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। अलग-अलग मामलों से जुड़ी समस्याओं के निस्तारण के लिए उन्होंने संबंधित प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों को प्रार्थना पत्र संदर्भित कर निर्देशित किया कि सभी समस्याओं का निस्तारण समयबद्ध और निष्पक्ष होना चाहिए।

जमीन कब्जा किए जाने से संबंधित शिकायतों पर मुख्यमंत्री ने प्रशासन और पुलिस अधिकारियों से कहा यदि कोई दबंग किसी की जमीन पर जबरन कब्जा कर रहा हो तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए। जनता दर्शन में हर बार की तरह इस बार भी कुछ लोग इलाज के लिए आर्थिक मदद की गुहार लेकर आए थे। मुख्यमंत्री ने उन्हें भरोसा दिया कि धन के अभाव में किसी का इलाज नहीं रुकेगा। उन्होंने अफसरों को निर्देश दिया कि जो भी जरूरतमंद हैं, प्रशासन उनके उच्चस्तरीय इलाज का एस्टीमेट शीघ्रता से बनवाकर उपलब्ध कराए। एस्टीमेट मिलते ही सरकार तुरंत धन उपलब्ध कराएगी। जनता दर्शन में कुछ महिलाओं के साथ उनके बच्चे भी आए थे। मुख्यमंत्री ने इन बच्चों को दुलारा और चॉकलेट के साथ आशीर्वाद दिया।

गोशाला में गोवंश को दुलारकर खिलाया गुड़

गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान मंगलवार सुबह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दिनचर्या परंपरागत रही। उन्होंने प्रातःकाल गोरखनाथ मंदिर में शिवावतार गुरु गोरखनाथ का दर्शन-पूजन किया और अपने गुरु ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधि स्थल पर जाकर मत्था टेका। सीएम योगी जब भी गोरखनाथ मंदिर में होते हैं तो गोसेवा उनकी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा रहती है। मंगलवार सुबह वह मंदिर परिसर का भ्रमण करते हुए मंदिर की गोशाला में पहुंचे और वहां कुछ समय व्यतीत किया। गोशाला में मुख्यमंत्री ने गोवंश के माथे पर हाथ फेरा, उन्हें खूब दुलारा और अपने हाथों से गुड़ खिलाया।

आयुष मंत्रालय ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 की योजना बनाने के लिए अंतर-मंत्रालयी समिति की बैठक बुलाई

योग एक स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने वाला जनांदोलन बन चुका है: केंद्रीय मंत्री श्री प्रतापराव जाधव

आईडीवाई 2026 सामूहिक और समावेशी भागीदारी के साथ एक वास्तविक 'सम्पूर्ण-सरकार' एवं 'सम्पूर्ण-समाज' वाला आंदोलन होगा : श्री जाधव

स्वास्थ्य, कल्याण और आंतरिक संतुलन के साधन के रूप में योग को वैश्विक स्वीकृति मिल रही है : श्री सिबी जॉर्ज, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय

(जीएनएस)।

आयुष मंत्रालय ने आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (आईडीवाई) 2026 की गतिविधियों की योजना और समन्वित क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श करने के लिए आज अंतर-मंत्रालयी समिति (आईएमसी) की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की। नई दिल्ली में आयोजित इस बैठक में केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, प्रख्यात योग गुरु, योग संस्थानों और संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री प्रतापराव जाधव ने की, जो समग्र स्वास्थ्य और कल्याण के साधन के रूप में योग की वैश्विक और राष्ट्रीय पहुंच को और मजबूत

करने की सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

अपने संबोधन में श्री प्रतापराव जाधव ने बैठक में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों, वरिष्ठ अधिकारियों, योग विशेषज्ञों और संस्थागत प्रतिनिधियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। हैदराबाद में आयोजित आईडीवाई 2026 के हालिया 50 दिनों की उलटी गिनती वाले कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए उन्होंने योग के प्रति बढ़ती जन-रुचि और भागीदारी को रेखांकित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि योग अब केवल सत्रों और चटाइयों तक सीमित अभ्यास नहीं रहे गया, बल्कि एक व्यापक जनांदोलन में बदल गया है, जो स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देता है।

भारत के वैश्विक नेतृत्व पर प्रकाश डालते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 2015 से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 190 से अधिक देशों तक पहुंच गया है, जिससे विश्व भर में लाखों लोग शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और आंतरिक शांति के लिए योग अपनाने के लिए प्रेरित हुए हैं।

उन्होंने 'सम्पूर्ण-सरकार दृष्टिकोण' पर बल देते हुए सभी मंत्रालयों और विभागों से आईडीवाई 2026 की सफलता में सक्रिय योगदान देने का आ'ान किया। उन्होंने प्रमुख फोकस क्षेत्रों को रेखांकित किया, जिनमें 21 जून को सामान्य योग प्रोटोकॉल के पालन में अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करना, स्कूलों, कार्यस्थलों और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों जैसे संस्थागत ढांचों में योग को एकीकृत करना, ग्रामीण और वंचित आबादी, सीमावर्ती और दूरस्थ क्षेत्रों में समावेशिता सुनिश्चित करना, प्रचार-प्रसार के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों का लाभ उठाना और गतिविधियों का समयबद्ध क्रियान्वयन और रिपोर्टिंग सुनिश्चित करना शामिल है।

श्री जाधव ने सभी मंत्रालयों और अन्य हितधारकों से समयबद्ध तरीके से सहयोग, समन्वय और सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया और कहा कि आइए हम सब मिलकर यह सुनिश्चित करें कि 12वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस अभूतपूर्व जनभागीदारी, प्रभावी समन्वय और व्यापक जागरूकता के साथ मनाया जाए।

योग को बढ़ावा देने के लिए भारत की वैश्विक प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करते हुए विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री सिबी जॉर्ज ने कहा कि विदेश मंत्रालय विदेशों में स्थित अपने दूतावासों, वाणिज्य दूतावासों और मिशनों के नेटवर्क के माध्यम से आईडीवाई 2026 के विश्वव्यापी आयोजन के लिए पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विदेशों में स्थित भारतीय मिशन योग की वैश्विक उपस्थिति को और अधिक विस्तारित करने के लिए व्यापक स्तर पर प्रचार गतिविधियों, साझेदारियों और सामुदायिक सहभागिता पहलों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

आज के प्रौद्योगिकी-चालित युग में भविष्य हेतु तैयार रहने के लिए अनुसंधान और अप्रत्याशित घटक आवश्यक है-रक्षा मंत्री

'निर्देशित ऊर्जा और हाइपरसोनिक हथियार, जल के भीतर और अंतरिक्ष, क्वांटम तकनीक, एआई और एमएल जैसे उभरते क्षेत्रों में प्रगति आवश्यक है'

'ऑपरेशन सिंदूर इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि भारत युद्ध की बदलती प्रकृति को समझता है और अटूट आत्मविश्वास के साथ तकनीकी प्रगति को तैनात करता है'

'वित्त वर्ष 2025-26 में रक्षा उत्पादन 1.54 लाख करोड़ रुपये के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंचा, जिसमें रक्षा निर्यात 38,424 करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है; यह वृद्धि और भी तेज होने की संभावना है'

(जीएनएस)।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने तीव्र तकनीकी क्रांति के वर्तमान युग में भविष्य के लिए तैयार रहने हेतु अनुसंधान पर निरंतर ध्यान केंद्रित करने और अप्रत्याशित नवाचार की रणनीति अपनाने के महत्व पर बल दिया। रक्षा मंत्री ने 4 मई, 2026 को प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में भारतीय सेना की उत्तरी एवं मध्य कमान तथा भारतीय रक्षा निमार्ता सोसायटी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय नॉर्थ टेक संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में रक्षा कर्मियों, उद्योगपतियों, नवप्रवर्तकों, स्टार्टअप्स और शिक्षा जगत के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए यह विचार व्यक्त किए।

रक्षा मंत्री ने आधुनिक युद्ध में हो रहे तकनीकी बदलावों की त्वरित गति और अप्रत्याशित रूप से उभरते हुए अनायास हमलों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रूस-यूक्रेन संघर्ष में, युद्ध का स्वरूप महज तीन-चार वर्षों में टैंकों और मिसाइलों से बदलकर ड्रोन और सेंसर जैसे क्रांतिकारी उपकरणों में परिवर्तित हो गया। इसके अलावा, दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी वस्तुएं भी घातक हथियार बनती जा रही हैं। लेबनान और सीरिया में हुए पेजर हमलों ने आधुनिक युद्ध पद्धतियों के पुनर्मूल्यांकन को प्रेरित किया है। ऐसी स्थिति में हमें तैयार रहना होगा।

श्री राजनाथ सिंह ने सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने और ऐसी क्षमताएं विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया, जो आवश्यकता पड़ने पर देश को अपने शत्रु पर अप्रत्याशित हमला करने में सक्षम बनाएं। उन्होंने कहा कि इतिहास साक्षी है कि युद्ध में निर्णायक बढ़त सदैव उसी को मिलती है जिसके पास अचानक हमला करने की शक्ति होती है। हालांकि हमारे रक्षा बल पहले से ही इस दिशा में कार्य कर रहे हैं, हमें और अधिक सक्रियता के साथ आगे बढ़ना होगा।

वर्तमान जटिल और तेजी से बदलते परिवेश में अनुकूलनशीलता सुनिश्चित करने के महत्व पर बल देते हुए, रक्षा मंत्री ने कहा कि जो राष्ट्र तकनीकी क्रांति को सबसे तेजी से अपनाएगा, उसे भविष्य के युद्ध परिदृश्य में निर्णायक बढ़त प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि आज की दुनिया में अनुसंधान का कोई विकल्प नहीं है और भविष्य के युद्ध किस प्रकार लड़े जाएंगे, यह आज प्रयोगशालाओं में निर्धारित हो रहा है।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार ने रक्षा अनुसंधान को अपनी प्राथमिकताओं के केंद्र में रखा है और डीआरडीओ के माध्यम से इसे अगले स्तर तक ले जाने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ अब इस यात्रा पर अकेला नहीं है। 'दूर तक जाने के लिए साथ चलें' के मंत्र से प्रेरित होकर, यह बड़ी संख्या में उद्योगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहा है।

रक्षा मंत्री ने बताया कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास बजट का 25 प्रतिशत हिस्सा उद्योग, शिक्षा जगत और स्टार्टअप्स को आवंटित किया गया है और अब तक इन संस्थाओं ने बजट का 4,500 करोड़ रुपये से अधिक का उपयोग कर लिया है। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की एक नई नीति लागू की गई है, जिसके अंतर्गत विकास-सह-उत्पादन साझेदारों, विकास साझेदारों और उत्पादन एजेंसियों के लिए पहले लगने वाला 20 प्रतिशत शुल्क पूरी तरह से माफ कर दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप, डीआरडीओ ने अब तक विभिन्न उद्योगों को 2,200 से अधिक प्रौद्योगिकियां हस्तांतरित की हैं।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि डीआरडीओ ने भारतीय उद्योगों को अपने पेटेंट तक निःशुल्क पहुंच प्रदान करने की नीति शुरू की है, जिससे उनकी तकनीकी क्षमताओं और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता दोनों को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ की परीक्षण सुविधाएं भी भुगतान के आधार पर उद्योगों के लिए खोल दी गई हैं। हर वर्ष सैकड़ों उद्योग अनुसंधान एवं विकास सहायता के लिए इन सुविधाओं का उपयोग करते हैं।

रक्षा मंत्री ने कहा कि उद्योगों को निर्देशित ऊर्जा हथियार, हाइपरसोनिक हथियार, जलमग्न क्षेत्र जागरूकता, अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता, क्वांटम प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में आगे बढ़कर उत्कृष्टता हासिल करनी चाहिए। उन्होंने इस प्रयास में सरकार के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया।

श्री राजनाथ सिंह ने बदलती परिस्थितियों का गहन विश्लेषण करने और भारत की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए रक्षा बलों और उद्योग जगत की सराहना की और ऑपरेशन सिंदूर को तकनीकी युद्ध और राष्ट्र की तत्परता का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने विश्व के सामने हमारे रक्षा बलों की वीरता और क्षमताओं का प्रदर्शन किया। इस ऑपरेशन के दौरान आकाशतीर, आकाश मिसाइल प्रणाली और ब्रह्मोस जैसी उन्नत मिसाइल प्रणालियों सहित अत्याधुनिक स्वदेशी उपकरणों का उपयोग किया गया। यह इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि हम न केवल युद्ध की बदलती प्रकृति को समझते हैं, बल्कि अटूट आत्मविश्वास के साथ तकनीकी प्रगति को भी लागू कर रहे हैं।

रक्षा मंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा देश के रक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए उठाए गए कदमों का उल्लेख करते हुए कहा कि इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सीलेंस (आईडेक्स), एसीटिंग डेवलपमेंट ऑफ इनोवेटिव टेक्नोलॉजीज विद आईडेक्स (एडीआईटीआई) और टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट फंड (टीडीएफ) जैसी पहलें नवाचार को बढ़ावा देने और निजी क्षेत्र की भागीदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि रक्षा क्षेत्र में अवसंरचना विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने उत्तर प्रदेश में शुरू की गई रक्षा क्षेत्र से सीधे जुड़ी कई अवसंरचना परियोजनाओं, विशेष रूप से रक्षा औद्योगिक गलियारे की स्थापना की जानकारी देते हुए कहा कि यह भारत की रक्षा क्षमताओं को सक्रिय रूप से बढ़ा रही हैं।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार के आत्मनिर्भरता प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं, क्योंकि वित्त वर्ष 2025-26 में घरेलू रक्षा उत्पादन रिकॉर्ड 1.54 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है, जबकि रक्षा निर्यात सर्वकालिक उच्च स्तर 38,424 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि यह वृद्धि और भी तेज होने की संभावना है और इस उपलब्धि में निजी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जर्मनी की अपनी हाल की यात्रा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि विदेशी कंपनियां भारतीय रक्षा कंपनियों के साथ साझेदारी करने में गहरी रुचि दिखा रही हैं, जो अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रक्षा उद्योग की बढ़ती प्रतिष्ठा का प्रमाण है।

रक्षा मंत्री ने 'रक्षा त्रिवेणी संगम-जहां प्रौद्योगिकी, उद्योग और सैन्य शक्ति का संगम होता है' विषय पर आधारित नॉर्थ टेक संगोष्ठी को नवाचार को बढ़ावा देने और भारत की तकनीकी एवं रक्षा तैयारियों को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने सभी हितधारकों को अपने प्रदर्शन को और बेहतर बनाने में सक्षम बनाने के लिए ठोस सुझावों की आशा व्यक्त की। उन्होंने हितधारकों को विशेषज्ञता साझा करने और उभरते एवं अनछुए क्षेत्रों में सामूहिक रूप से क्षमताओं को बढ़ाने में सक्षम बनाने के लिए एक ज्ञान गलियारे के निर्माण का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि यह हमारा सामूहिक प्रयास है कि हम आने वाले समय में विश्व की सबसे शक्तिशाली सैन्य शक्ति के रूप में खुद को स्थापित करें।

अपने संबोधन में, केंद्रीय कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ (जीओसी-इन-सी) लेफ्टिनेंट जनरल अनिंद्या सेनगुप्ता ने कहा कि यह संगोष्ठी रक्षा बलों, उद्योग, स्टार्टअप, नवप्रवर्तकों और शिक्षाविदों को महत्वपूर्ण परिचालन चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से स्वदेशी तकनीकी समाधान विकसित करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि यह प्रयास संयुक्तता, आत्मनिर्भरता और नवाचार (जेएआई) के सिद्धांत द्वारा निर्देशित है, जो देश की युद्ध क्षमता को मजबूत करने के लिए आवश्यक है।

उत्तरी कमान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा ने इस बात पर बल दिया कि संगोष्ठी का उद्देश्य विचारों, नवाचारों और अनुभवों को तैनाती योग्य क्षमताओं में परिवर्तित करना है। उन्होंने कहा कि हाल के संघर्षों को देखते हुए, मानवरहित हवाई प्रणाली (यूएएस), काउंटर-यूएएस सिस्टम, एआई-सक्षम निर्णय लेने वाले उपकरण, सटीक मारक क्षमताएं और उन्नत तोपखाना प्रणालियां जैसी विशिष्ट क्षमताएं युद्धक्षेत्र में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अपरिहार्य हो गई हैं।

दिल्ली के वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) में सुधार के मद्देनजर पूरे एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) का चरण-I तत्काल प्रभाव से हटाया गया

(जीएनएस)।

दिल्ली के औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में सुधार तथा भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) और भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) के पूर्वानुमानों के अनुसार आगामी दिनों में वायु गुणवत्ता के 'संतोषजनक' से 'मध्यम' श्रेणी में बने रहने की संभावना को देखते हुए, आज ग्रैप की उप-समिति ने पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में प्रचलित ग्रैप के चरण-कके तहत लागू सभी कार्रवाइयों को तत्काल प्रभाव से हटाने का निर्णय लिया।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (ग्रैप) पर उप-समिति ने अपने दिनांक 16.04.2026 के आदेश के तहत, जब दिल्ली का औसत एक्यूआई बढ़ने की प्रवृत्ति दिखा रहा था, तब वर्तमान ग्रैप का चरण-कलागू किया था।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा जारी एक्यूआई बुलेटिन के अनुसार, दिल्ली का दैनिक औसत एक्यूआई 03.05.2026 को 175 दर्ज किया गया, जो वर्षा और अनुकूल मौसम संबंधी परिस्थितियों के कारण 04.05.2026 को घटकर 88 रह गया, जिससे वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

बेहतर एक्यूआई स्तर को बनाए रखने के उद्देश्य से, एनसीआर में संबंधित राज्य सरकारों/जीएनसीटीडी की सभी एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि आयोग द्वारा जारी सभी वैधानिक निदेशों, परामर्शों और आदेशों का पूर्ण गंभीरता के साथ पालन एवं क्रियान्वयन किया जाए। इसमें पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) तथा संबंधित राज्य सरकारों/जीएनसीटीडी और प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों/डीपीसीसी द्वारा जारी नियम, विनियम, दिशानिर्देश एवं संबंधित निर्देश शामिल हैं, जो सभी संबंधित क्षेत्रों पर लागू होते हैं।

इस संदर्भ में, सभी संबंधित एजेंसियों को आयोग द्वारा एनसीआर में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने हेतु जारी व्यापक नीति में उल्लिखित विभिन्न उपायों और निर्धारित समय-सीमाओं का संज्ञान लेते हुए क्षेत्र में उपयुक्त कार्रवाई करनी होगी, विशेष रूप से धूल नियंत्रण उपायों पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

उप-समिति वायु गुणवत्ता की स्थिति पर कड़ी निगरानी बनाए रखेगी तथा भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) और भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान स्थान(आईआईटीएम) द्वारा उपलब्ध कराए गए पूर्वानुमानों के आधार पर समय-समय पर स्थिति की समीक्षा करते हुए आगे के उपयुक्त निर्णय लेगी।

राजनीति में अयाराम-गयाराम: भारत में विचारधारा पर सत्ता का गणित हावी हो रहा है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा)

सूरत। हमारे देश की राजनीति अब इस हद तक बिगड़ चुकी है कि इसे बेहद निम्न स्तर का कहा जा सकता है, जहां न केवल नैतिकता और सदाचार गायब हो गए हैं, बल्कि सरकार, जो चुनाव के दौरान किए गए वादों को भी लॉलीपॉप की तरह नहीं निभाती, पूरी तरह से स्तब्ध और सुस्त अवस्था में जी रही प्रतीत होती है।

आइए आज की बेहद हल्की-फुल्की राजनीति की बात करें, जहाँ आयराम-गयाराम कोई नई बात नहीं है। लेकिन अगर कुछ बड़े चेहरे भी इसी नीति के साथ आगे आते हैं, तो सवाल सिर्फ उनकी वफादारी पर ही नहीं उठता, बल्कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के स्वास्थ्य पर भी सवाल खड़ा होता है।

राज्यसभा में "आम आदमी पार्टी" के 7 सांसदों का भाजपा में विलय न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि यह उनकी अपनी (जिस पार्टी से वे आते हैं) विचारधारा को दशार्ने का भी मामला है। इस प्रकार, एक ओर भाजपा अपनी विशेष रणनीति (जिसमें कोई नीति ही नहीं है) की मदद से संसद में अपनी ताकत बढ़ा रही है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष की एकता को तोड़कर भाजपा का रास्ता आसान बना रही है।

ऐसे में सवाल उठता है कि क्या भारतीय राजनीति में विचारों और सिद्धांतों से ज्यादा सत्ता का गणित ही चल रहा है? क्या यह एकतरफा आयरम-गयारम एक धंधा बन गया है? या फिर यह लोकतंत्र पर सीधा हमला है? पहले तीर-कमान, फिर घड़ियाँ और अब झाड़ू भी बिकने लगी हैं? तो क्या अब इस विचारधारा की दुकान में सब कुछ बिकेगा? भाजपा के फॉर्मूले के अनुसार, विपक्ष को तोड़ो, किसी भी तरह से उसे सरकार से जोड़ो।